Moti Lal Kemmu's
भाँड-दुहाई
Bhaand-Duhayee
A Contemporary Kashmiri play based n Bhand Pather
Hindi Translation by Shashi Shekhar Toshkhani

भाँड-दुहाई

(जब आधार नहीं रहते हैं)

Bhaand-Duhaayee

(A Contemporary Kashmiri Play based on Kashmiri Drama 'bhàndû-päthûr')

मोती लाल क्यमू

==========

'Bhaand-Duhaayee', A Contemporary Kashmiri Play based on *bhànd-päthûr* by Moti Lal Kemmu.
Hindi translation by Shashi Shekhar Toshkhani
Source: Moti Lal Kemmu's 'Bhand-Duhaayee', published in 2002.
Internet Version by M.K.Raina.
Work completed on 30.11.2006 ~ Updated 05.05.2020

भाँड दुहाई

(जब आधार नहीं रहते हैं)

यह नाटक आतंकवादी हिंसा के झटकों से उत्पन्न परिस्थितियों में उन आधारों के खिसकने के बारे में है जिन पर कश्मीर का लोकाचार टिका रहा है। इस में भाँडों के एक गाँव के एक मागुन अथवा अगुआ के माध्यम से आम कश्मीरी के मन में आतंकवादियों और उन की विचारधारा के प्रति पनप रहे रोष और विद्रोह की ओर संकेत है। यह इशारा भी अर्थवान है कि कश्मीर में आतंकवाद को चुनौती लोक सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षकों की ओर से मिल रही है। इन परंपराओं की जडें मानवतावादी मूल्यों में गहरी हैं। नाटक में मागुन को अपने इकलौते बेटे और खुद अपनी जान की कीमत दे कर इन परंपराओं और मूल्यों की रक्षा करते दिखाया गया है।

मागुन शब्द किसी व्यक्ति विशेष का नाम न होकर भाँडों के अगुआ के लिए परयुक्त होता है। यह शब्द संभवत: संस्कृत महागुणी से निकला है। कश्मीरी भाषा में इस का प्रयोग सब से पहले चौदहवीं शताब्दी के महान संत कवि शेख नूरुद्दीन के पदों में मिलता है।

संस्कृत नाटकों के सूत्रधार की तरह मागुन विषय-प्रवेश करने और पात्र-प्रवेश कराने के लिये नाटक के प्रारंभ में मंच पर आता है। उस के बाद स्वयं राजा अथवा किसी प्रमुख पात्र की भूमिका निभाता है। दर्शकों और अभिनेताओं के बीच एक सेतु का काम करता हुआ वह इस प्रकार से निर्देशक का उत्तरदायित्व भी संभालता है। वही इस बात का निर्णय करता है कि कौन अभिनेता किस पात्र का अभिनय करेगा, कौन से संवाद बोलेगा, कौन से गीत गाएगा।

कश्मीर में लगभग ८० गाँवों में भाँड रहते हैं। हर गाँव में भाँडों के टोले का अपना अपना मागुन होता है। ब्याह-शादी के अवसरों और ईद आदि त्योहारों पर जब ये भाँड ढोल शहनाई बजाने जाते हैं अथवा उत्सवों और मेलों-ठेलों में भाँड जश्न यानी स्वाँगों अथवा

लोक नाटकों का प्रदर्शन करने जाते हैं तो मागुन उन का नेतृत्व करता है। उस के लिए कश्मीरी लोक नाट्य विधा भाँड पोथुर के हर अंग, अभिनय, गीत-संगीत, नृत्य, मंच व्यवस्था का पूरा पूरा ज्ञान होना आवश्यक है। मागुन ही प्रदर्शन के लिये स्वाँगों का चयन करता है और उन के प्रस्तुतीकरण की व्यवस्था भी। भाँडों का सभी साज़-सामान, वस्त्राभूषण आदि उसी के पास सुरक्षित रहता है। देखा जाए तो मागुन अपने आप में एक पूरी संस्था होता है, लोक नाट्य और लोक-संस्कृति की परंपरा का संरक्षक।

मंच पर उस का साथ देने के लिए एक स्त्री पात्रा गुपाली को लाने की भी परंपरा है। कश्मीरी काव्य में गुपाली का उल्लेख अनेक स्थानों पर हुआ है। वास्तव में उस का काम बहुत कुछ वैसा ही होता है जैसा संस्कृत नाटकों में नटी का। प्रस्तुत नाटक में गुपाली को इस से अधिक व्यापक भूमिका दी गई है और नायिका के रूप में लाया गया है।

इस में मागुन और गुपाली दोनों जहाँ कश्मीरी लोक संस्कृति के द्वारा क्षत-विक्षत चेहरे का बिम्ब प्रस्तुत करते हैं, वहाँ उस की अदम्य आंतरिक शक्ति से भी परिचित कराते हैं।

शशि शेखर तोषखानी

भाँड-दुहाई

पात्र

मागुन : भाँडों के एक टोले का प्रतिष्ठित अगुआ, आयु ५५ वर्ष
नुंदा : मागुन का युवा पुत्र जो आंतकवादी बन गया है। आयु २२ वर्ष
भाँडिन : मागुन की पत्नी, नुंदा की मां, आयु ५० वर्ष
कमाल शेर: वरिष्ठ भाँड अभिनेता, आयु में मागुन के बराबर
वाद्यकार : शहनाईवादक, ढोलवादक, नगाडा बजाने वाले
नटुवे : कुल सात
मसखरे : कुल पाँच
नकाबपोश: कम से कम नौ

★ ★ ★

एक प्रतिष्ठित मागुन की मढैया। कमरे में भाँडों के साज-सामान की गठरियां और बक्से आदि यहां वहां रखे हुए हैं। दीवारों पर लाइटों के स्टैंड, सोटियां, ढोल नगाडे आदि टंगे हैं। मढैया में एक ओर प्रवेश करने का दरवाज़ा है और दूसरी ओर एक खिडकी। खिडकी से कुछ हट कर रसोई के कमरे में जाने का द्वार है। कमरे के एक कोने में घर की कुछ चीज़ों के साथ एक ट्रांज़िस्टर रखा हुआ है। सारा रंगकार्य इसी मढैया में संपन्न होता है। मागुन बैठा रेडियो पर समाचार सुन रहा दिखाई देता है।

रेडियो समाचार: *हम बडे दु:ख के साथ यह खबर दे रहे हैं कि लोकमंच की प्रसिद्ध अभिनेत्री शमीमा परवीन उर्फ गुपाली की गला घोंट कर हत्या कर दी गई है। उस की लाश श्रीनगर में एक सडक के किनारे पडी मिली, जहां अज्ञात आंतकवादी उसे फेंक आए थे।*

.... (रेडियो पर समाचार चलते रहते हैं)

मागुन : बडे अफसोस की बात है। समझो अब हमारी कला गई। अब तो भाँडों के काम पर भी इन की ललचाई नज़र पड गई है। अरे सुनते हो, नुंदा ? (नुंदा रसोई के कमरे से आकर एकाएक रेडियो बंद कर देता है।)

नुंदा : क्या बात है बाबा ? किसलिए आवाज़ दी ?

मागुन : सुना नहीं ? शमीमा का गला घोंट दिया गया।

नुंदा : (आश्चर्य से) अच्छा ! पर तुम इतने घबराए हुए क्यों हो ?

मागुन : (बेचैनी सी अनुभव करते हुए) हाँ, मैं घबरा गया हूं, परेशान हूं, सोच में पड गया हूं। कोई सहे तो कितना ? (आंखों से आँसू आ जाते हैं।)

नुंदा : आजकल तो यह चलते ही रहता है बाबा ! कोई अगर तहरीक को नुकसान पहुंचाए तो उस का अंजाम यही तो होगा।

मागुन : चुप रह ! किसी कलाकार को सरे आम मार डालना, यह भी कोई तहरीक है भला ? हराम के पैसों और मुफ्त के हथियारों ने तुम लोगों की तो बुद्धि ही बिगाड दी है। मरोगे तुम लोग भी कुत्तों की मौत, पर तब तक यह पुश्तैनी धंधा ही बाकी नहीं रहेगा।

नुंदा : चिल्ला कर मत बोलो, बाबा। कहीं मेरे ए.सी. (एरिया कमांडर) ने सुन लिया तो अभी जान से मार डालेगा।

मागुन : अबे सुनता है तो सुन ले। मरना तो है ही एक न एक दिन, आज ही

मरेंगे।

नुंदा : (जाते हुए) ऐसे खुदगर्ज़ मत बनो बाबा! और भी तो लोग रहते हैं इस घर में तुम्हारे अलावा। वे क्यों मरें। चुप करके बैठे रहो, अपने शाम का वक्त हो चुका है।

मागुन : हाँ, वक्त काफी हो चुका है। चौथा साल है यह मुंह बंद किए हुए। पर अब कुछ न कुछ करना होगा।

(नुंदा अंदर के कमरे में जाता है और दो बंदूकें ले कर निकलता है। एक बंदूक कंधे पर रख लेता है, एक हाथ में।)

नुंदा : गुपाली ने मुखबिरी की थी, उसी का अंजाम उस ने पाया। गला घोंटे जाने से मरी।

मागुन : गलत! गुपाली नहीं मरती। प्रेमी गुसाई (एक लोकप्रिय स्वांग का प्रमुख पात्र) उस के दर्शन करके आकाश मार्ग से चला जाता है। गुपाली उसे ठौर-ठौर ढूंढती फिरती है।

नुंदा : अब नहीं ढूंढेगी। बैठो अपने चुप करके। बेकार मैं उछल-कूद मत करो।

(बाहर जाने लगता है।)

मागुन : नहीं, मैं चुप करके नहीं बैठूंगा। मैं अभी जमा करूंगा अपने सभी भाँडों, मसखरों, साज़िंदों और बाकी तमाम लोगों को। अब तो कोई न कोई उपाय करना ही होगा। हौसले को मज़बूत करना होगा, वरना अपनी सारी कला को गंवा देंगे। खो बैठेंगे वह सब जो हासिल किया है। (नुंदा पलट कर आता है।)

नुंदा : कहीं बावरे तो नहीं हो गये हो, बाबा ?

मागुन : बावरा ही समझो। बहुत से मत के मारे कला को बावरापन समझते हैं। तू भी उन में से एक है। चल हट मेरे सामने से, नासपिटे बंदूकिये!

नुंदा : माँ, माँ! बाबा पर बावरापन सवार है। जानते नहीं कि ये लोग देखते देखते गोली से उडा सकते हैं।

मागुन : (गुस्से में) अबे जा, दूर हो जा यहां से। जा अपने इन सारे हथियारों को लेकर। जाकर इन्हें दरिया में फेंक आ। (मागुन की पत्नी ऊंचे ऊंचे स्वर में उन की बातें सुन कर रसोई के कमरे से घबराई हुई

आती है।)

भाँडिन : अरे अरे, यों चिल्ला क्यों रहे हो? बेटे से किस बात पर झगड रहे हो। अगर कहीं वह अपना आपा खो बैठे और बंदूक उठा ले तो जाने क्या कर बैठेगा।

मागुन : गोली मार देगा, यही ना? मर जाऊंगा। जब गुपाली ने इतनी जुर्रत दिखाई, तो मैं क्यों पीछे रहूं? हथियार देख कर क्यों खौफ खाऊं?

नुंदा : बाबा पर जनून सवार है, माँ। सारा गाँव खिडकियाँ और दरवाज़े बंद किए चुप बैठा है, और इन्हें प्रेम का दर्द सता रहा है। (जाते जाते) अपने आप को मौत के हवाले करने की सूझी है।

(धडाक से दरवाज़ा बंद करके चला जाता है।)

मागुन : अरी पकड मत, छोड मुझे! जा और मेरा नगाडा ला दे।

भाँडिन : नगाडा? सिरहाने रखना है क्या?

मागुन : चार साल से सिरहाने ही तो रखते आये हैं। पर अब नहीं। अब उसे बजाना है और उस की धूल झाडनी है।

भाँडिन : (छाती पीट कर) यह क्या कर रहे हो? बैठे बैठाए क्यों मुसीबत को घर बुला रहे हो?

मागुन : तुम से किसी ने इस बारे में सोचने को नहीं कहा। गुपाली को तो शहर के बीच रास्ते पर गला घोंट दिया गया था।

(झटके से उठता है और खूंटी पर से अपना नगाडा उतार लाता है। फिर सोटी उठा कर उसे बजाने लगता है। पत्नी के साथ उस की छीना झपटी हो जाती है।)

भाँडिन : इसे एक तरफ को रख दो।

मागुन : किस तरफ को?

भाँडिन : खुदा की कसम, बहुत ला परवाही कर रह हो। अभी आ धमकेंगे वह, क्या कहते हैं उन्हें ... मुजाहिद, और गोलियां बरसायेंगे।

मागुन : तो तू भी डरती है इन बेशऊर धायँ धायँ करने वालों से!

भाँडिन : अपनी जान का किसे डर नहीं?

मागुन : जान तो जन्म लेते ही अपने बस में नहीं रहती, फिर मरने से क्या डरना? छोड, मुझे आवाज़ लगाने दे!

भाँडिन : कौन चला आएगा तुम्हारे बुलाने पर? कौन खेलेगा अपनी जान

से ?

मागुन : खेल जारी रहेगा। चार साल के बाद यह पहला बुलावा है। देखना अभी चले आएँगे सब के सब, मेरे भाँड, कलाकार, मसखरे, साज़िन्दे!

(भाँडिन खिडकी तक जाती है और फिर लौट आती है।)

भाँडिन : सभी बैठे हैं अपने अपने घर में, खिडकियां दरवाज़े सब बंद किए। यहाँ कौन आएगा ?

मागुन : (नगाडे पर चोट करते हु) आवाज़ सुनते ही सभी चले आएँगे।

(मागुन खिडकी के पास जा कर नगाडा बजाता है। भाँडिन दरवाज़े पर जाती है और कहती है)

भाँडिन : जाने क्या देखना है ? चला गया तुम्हारा इकलौता बेटा घर छोड कर।

मागुन : जाने दो उसे, बंदुकिया हरामखोर!

भाँडिन : बंद करो नगाडा बजाना। कहीं उसे मार न डालें!

(मागुन नगाडा बजाना बंद करके पीछे मुडकर देखता है)

मागुन : मार डालें! अब तो मौत ही में उस का छुटकारा है। गुमराह होने से, पुशतैनी काम धंधा छोडने से, बुरे बुरे कामों में लगने से, बुरे चाल-चलन से छुटकारा।

भाँडिन : (रोती है) तुम्हारे भीतर से जैसे काल बोल रहा है। बसे बसाए घर को मेरे उजाड कर ही दम लोगे!

(भाँडिन बाहर दरवाज़े पर जाती है। फिर कुछ क्षण बाद किसी के आने की आहट पहचान कर वापस आ जाती है। मागुन खिडकी के पास खडा रह कर फिर से नगाडा बजाना शुरू करता है।)

भाँडिन : रहने भी दो अब नगाडा बजाना। आ गए तो तुम्हारे हमजोली, क़िस्से गढ़ने वाले भाँड! अब जो जी में आए, करो। तुम तो अपने बाल-बच्चों को मरवा कर ही मानोगे।

(भाँडिन रूठ कर एक ओर जा कर बैठ जाती है। मागुन गंभीरता से नगाडा बजाने ने लगता है। तभी भाँड कलाकार एक एक करके अंदर आते है। सभी हैरान से दिखाई देते हैं।)

एक भाँड : अस्सलाम अलैकुम। किसलिए बुलाया है ? सब ठीक ठाक तो है

ना ?

मम्मा मसख़रा: सलाम भाँडिन। अरे यहां सब चुप चाप क्यों हैं ? कहीं घर में कोई खटपट तो नहीं हुई जो आस-पडोस के भाँडों को भुलाया ?

(भाँडिन उठ कर खडी हो जाती है। वह कुछ चिन्तित सी दिखाई देती है।)

भाँडिन : (जले भुने स्वर में) तुम्हारे इस मागुन को जुनून चढ़ा है। बावरापन सवार है इस पर। इसे संभालो!

(बाहर चली जाती है। मागुन नगाडा बजाना बंद करके पीछे मुड़ कर देखता है। फिर नगाडा खिड़की के पास रख देता है।)

एक अन्य भाँड: क्यों जी, किसलिए बुलाया ? अब तो नगाडे की आवाज़ भूल ही गई है। खैरियत तो है ?

मागुन : अरे, यह तुम लोग पूछ रहे हो ? रेडियो पर खबर नहीं सुनी ?

मम्मा मसख़रा: कौन सी खबर ?

मागुन : शमीमा यानी गुपाली की शहर में गला घोंट कर हत्या कर दी गई है।

मम्मा मसख़रा: हाय हाय, यह तो अफ़सोस की बात है।

दूसरा भाँड: अफ़सोस, बहुत अफ़सोस। तौबा तौबा।

मागुन : उस की लाश सडक पर फेंक दी गई थी, बिलकुल नंगी।

अन्य : ओह ओह! बेगुनाह और बे मौत मारी गई बेचारी।

मागुन : लाश की शिनाख्त कर ली गई है।

वाद्यकार : अब हम क्या करें ?

मागुन : क्या करना चाहिए हमें ? सोच कर बताओ!

वाद्यकार : मातम!

कमाल शेर: हम मातमी इजलास बुलाएँगे।

वाद्यकार : मतलब!

मागुन : (सब की ओर संबोधन कर) आज उसे मारा। कल मुझे मारेंगे। फिर तुम्हें, तुम्हें। एक एक करके सब को। और फिर कोई मातम करने के लिए भी नहीं रहेगा। क्योंकि ... (चुप्पी) ... क्योंकि हम सब चुप हो गये हैं। सब का मुँह बंद है। आवाज़ बंद है। उधर जल्लाद पगला रहे हैं। हमारे लोकमंच की, परंपरा की जडें खोद डालने के लिए, हमारी संस्कृति को मिटाने, हमारे वजूद को नष्ट

करने के लिए! इसलिए .... (चुप्पी)

मम्मा मसख़रा: इसलिए क्या ?

मागुन : इसलिए हमें चुप्पी को तोडना होगा।

कमाल शेर: और चुप्पी तोडने के लिए हमें क्या करना होगा ?

मागुन : (गंभीरता से) स्वांग, भाँड, जश्न, नाटक!

मम्मा मसख़रा: मगर लोग कहां जमा होंगे ? किस जगह ? है कोई मुकाम जहां डर न हो, त्रास न हो ? एक तरफ नक़ाबपोश हैं और दूसरी तरफ वर्दीपोश।

मागुन : हम घर पर जश्न करेंगे, यहां, इसी वक्त।

अन्य : यहां ?

कमाल शेर: यह बात तो पल्ले नहीं पडी, मागुन साहब!

मागुन : हम अपना सब कुछ भुल्ला बैठे हैं। क्या ऐसे वक्त पहले ज़माने में नहीं आए हैं ? बताओ, क्या ज़िन्दगी में हम ने कभी अपने लिए जश्न किया है ? ख़ालिस अपने लिए, मन से, विश्वास से ? बोलो!

मम्मा मसख़रा: रात के वक्त शहनाई बजाएँ, ढोल नगाडे बजाएँ। जबकि लोग गोलियों के डर से घरों के अंदर दुबके बैठे हैं। यह कौन सी अक्लमंदा है मागुन साहब ?

मागुन : डरपोको! तुम लोग अपना फर्ज़ भूल गए हो। आतश और कातश भाँड ने भी तो अपने लिए स्वाँग किया था। तभी तो नुन्द ऋषि ने कहा है

(ऊंचे स्वर में नुंद ऋषि का पद गाता है)

आतश भाँड समय का अपने था दबंग जो छैला
किया रात भर जश्न, स्वाँग था उस ने भी तो खेला
जीते जी आकाश चढा वह, प्रभु से मांग लिया वर
वैसा ही वर देना मुझको भी तुम हे ईश्वर

मम्मा मसखरा: मगर आतश और कातश तो खुदा-दोस्त बंदे थे!

मागुन : (जैसे भावावेश में आ कर) उन्होंने सच्चे मन से मांगा और श्रद्धा और विश्वास के बल पर जीते जी आकाश में उठ गए। गुण तो मांगने

में है भाई, तो फिर बजाओ तुम भी साज़। सामान की पोटलियों की गाँठें खोल दो। भेस बदलो और वस्त्र पहन लो। कर लो स्वाँग शुरू।

कमाल शेर: मम्मा, आज हमारे रसूल मागुन किसी दूसरे ही मूड में हैं। चलो इन्ही का दिल रखते हैं। यहाँ हम घर के अंदर हैं और खिडकियां दरवाज़े भी सब बंद हैं। फिर हमें कौन सा हुडदंग मचाना है जो कोई हम पर इल्ज़ाम लगाए? और यहां आएगा भी कौन?

(भाँडिन झटके से दरवाज़ा खोल कर अंदर आती है)

भाँडिन : (मागुन से ऊंचे स्वर में) सुनो, नुंदा, हमारा इकलौता बेटा घर छोड कर चला गया है। साथ में अपनी सभी बंदूकें, सारे हथियार भी ले गया है।

मागुन : गया है तो जाए। अच्छा हुआ जो गया। नींद हराम कर रखी थी कमबख्त ने। अगर कहीं वर्दीपोश हथियारों की तलाशी लेने आते तो मकान को ईंट ईंट करके गिरा देते। जीते जी झोंक देते भट्टी में।

भाँडिन : कहीं कोई उस की घात में न बैठा हो!

मागुन : किसे पता है? नासपिटा बहकावे में आ गया था उन के। गया तो अच्छा ही हुआ।

भाँडिन : मगर गया वह तुम्हारी ही खातिर। कह गया है इस घर की रखवाली करूंगा, पूरे भाँडपुरे की रखवाली करूंगा, बाबा की और बाबा की विरासत की रखवाली करूंगा।

मागुन : मुझे तो विश्वास नहीं होता। वो तो अपने एरिया कमांडर के नाखून तले दबा है। जैसा वह कहेगा, वैसा ही करेगा।

मम्मा मसखरा: हथियारों की धौंस दिखा कर लोगों को दहशत में रखते हैं ये तो।

कमाल शेर: दहशतगर्दी के कैसे कैसे हथकंडे हैं?

भाँडिन : (भर्राए गले से) लगता है यहां लोग पुत्र का मोल ही भूल गये हैं। वही जाने जो पुत्र के दु:ख में तडपता है। कितने ही मासूम और जवान तो मारे जा रहे हैं।

कमाल शेर: तो फिर हम 'अकनंदुन' का स्वांग क्यों न करें? पुत्र की लालसा, पुत्र का मोल क्या है, यह लोगों को समझाएँ।

मम्मा मसखरा: मगर रानी बना करती थी शमीमा और वह बेचारी मारी गई।

मागुन : अरे, जिस का जी चाहे रानी बने। यह स्वाँग हमारी तरफ से शमीमा

को श्रद्धा की भेंट होगी।

कमाल शेर: पर सवाल है कि रानी कौन बनेगा। उस के आख़िर कोई योग्यता भी तो होनी चाहिये।

मम्मा मसखरा: पहले शमीमा बना करती थी या नुंद लाला।

कमाल शेर: और इस वक्त रानी की भूमिका कौन करेगा?

भाँडिन : (गंभीरता से) अब की बार मैं बनूंगी रानी।

(सभी आश्चर्य से उस की ओर देखते हैं)

मागुन : (आश्चर्य से) तू करेगी रानी का पार्ट? तू?

भाँडिन : हां, मैं। तीस साल से इसी मढ़ैया में तो रिहर्सल करते आ रहे हो। फिर कैसे नहीं होगा मुझे यह पार्ट याद? घर छोड कर जश्न करने नहीं गई हूं।

मम्मा मसखरा: शमीमा जो संवाद बोलती थी, जो पार्ट वो करती थी, वह सारा का सारा याद है?

भाँडिन : हाँ, एक एक लफ्ज़। वैसे ही जैसे यह कि कल रात क्या पका था?

(मागुन, जो भाँडिन को एकटक देख रहा होता है, पास जाकर उस के कंधे पर हाथ रखता है)

मागुन : ताज्जुब है! सच में तू रानी का पार्ट करेगी?

भाँडिन : इस में ताज्जुब की क्या बात है? अभी दिखाओं करके?

मागुन : शमीमा ने रानी का पार्ट गाँव गाँव में, शहर में, जम्मू और शिमला में कर के दिखाया है और दर्शकों से शाबाशी पाई है। तू वैसा कर सकेगी?

भाँडिन : उस ने रानी का पार्ट किया लोगों को दिखाने के लिए। मैं करूंगी तुम्हारे लिए, सिर्फ तुम्हारे लिए। जान भी देनी पडे तुम्हारे लिए तो उफ न करूंगी।

मागुन : वाह, क्या खूब! तब फिर हो जाये शुरू। वक्त का कोई भरोसा नहीं।

मम्मा मसख़रा : कलाकारों के शहनशाह रसूल मागुन के साथ रानी की भूमिका में होगी उस के अपने घर की रानी। क्या बात है! अब किस बात की देर है। स्वांग करने वाले भी हम और देखने वाले भी हम। चलो, शुरू कर ही लेते हैं।

(मागुन कमाल शेर और मम्मा मसखरा अंदर वाले कमरे में जाते हैं। वादक शहनाई, ढोल और नगाड़ा बजाना शुरू करते हैं। मंच के एक छोर पर नटुवे राजदरबार का दृश्य तैयार करते हैं। उन में से सात लडकियों के वेश में आते हैं और मंच पर नाचने लगते हैं। यही नटुवे कोरस के रूप में गाते भी हैं।)

कोरस तथा नृत्य:

चाहें री, हम तो चाहें री,
एक नन्हा सा भैया चाहें री!
दे दे एक नन्हा सा भाई,
दाता हम ने आस लगाई,
खेलें री, हम तो खेलें री,
हम तो नन्हे से भैया से खेलें री!
नाचें री, हम तो नाचें री,
हम तो आशा उमंग भरी नाचें री
माँगें री, हम तो माँगें री,
हम तो सच्चे हृदय से माँगें री
नवाएँ री, सिर नवाएँ री,
हम तो दाता के आगे सिर नवाएँ री
दे दे एक नन्हा सा भई,
दाता, हम ने आस लगाई
माँगे री, हम तो माँगे री,
हम तो सातों बहनें माँगे री!

(गाना और नाचना चल ही रहा होता है कि दो नटुवे एक परदा लिए आते हैं और नचैयों के पीछे जा कर खडे हो जाते हैं। परदे के पीछे से एक घंटे के बजने की आवाज़ सुनाई देती है। कमाल शेर राजा के वेश में आता है और एक स्टूल पर जा कर ऐसे बैठता है जैसे कि वह सिंहासन हो। अन्य भाँड शेष पात्रों की भूमिका में।)

कमाल शेर : यह कौन न्याय का घंटा बजा रहा है ?

(द्वारपाल बना एक मसखरा प्रवेश करता है)

द्वारपाल: राजन! कोई फरयादी द्वार पर खडा है।

कमाल शेर : कौन है यह फरियादी ?

द्वारपाल: महाराज वह जीभ कहाँ से लाऊं, जो बताऊं। हिम्मत नहीं पडती।

कमाल शेर : साफ साफ बताओ, फरयादी कौन है ?

द्वारपाल: राजमहल की शोभा, हमारी महारानी दुहाई देने आई है।

कमाल शेर : (चौंक कर) क्या ? फरयादी बन कर न्याय का घंटा बजा रही है ? हैरानी की बात है। उन्हें आदर और सम्मान के साथ दरबार में लाया जाए।

(परदा लिए हुए दो नटुवे तनिक आगे आते हैं और परदे को थोडा नीचे उतारते हैं। परदे के पीछे से रानी का आधा शरीर दिखाई देता है।)

कमाल शेर: महारानी!

भाँडिन : (परदे के ऊपर से दोनों हाथ पसारते हुए) महाराज, दुहाई है।

कमाल शेर : हम बहुत लज्जित हैं आप को फरयादी के रूप में देख कर। ज़रूरी हम से कोई भूल हुई है, कोई चूक। कहिए, आप किस लिए दुहाई दे रही हैं ?

भाँडिन : जब मन में अशांति हो, आँखों से नींद उड गई हो, दिन रात आँसुओं की झड़ी लगी हो, ओंठों पर आहें हों और हृदय को बस एक ही लालसा तडपा रही हो - पुत्र की लालसा, पुत्र की भूख - तब रानी भी दुहाई माँगने आती है, झोली फैलाती है।

(नटुवे परदा ले कर चले जाते हैं। भाँडिन कमाल शेर के आगे घुटनों के बल झुकती है)

भाँडिन : मुझे बस एक पुत्र चाहिए, एक बेटा।

कमाल शेर : पुत्र की लालसा ? पुत्र की भूख ? फरयादी, पुत्र का दान राजा के बस की बात नहीं। राजा आप भी इसी दु:ख का मारा है। यह दोनों का साझा दु:ख है।

भाँडिन : सात बेटियां सात राजकुमारों के साथ सात दिशाओं में चली जायेंगी, तब हमारे इस राज्य को कौन संभालेगा ?

कमाल शेर : यही सवाल तो अंदर अंदर से मुझे भी कुरेद रहा है, महारानी।

भाँडिन : यौवन के ये आखिरी बरस भी अगर बीत गए और पुत्र की भूख शांत न हुई तो क्या मैं दु:ख के मारे मर न जाऊंगी ?

कमाल शेर : धीरज रखें। ईश्वर हमारी भी मनोकामना पूरी करेगा।

भाँडिन : जिन माता पिता के पुत्र न हो, कौन उन का मरने के बाद तर्पण करेगा ? कौन उन के लिए देहरी पर दिया जलाएगा ?

कमाल शेर : हाय, जिन माता पिता के पुत्र न हो, कौन उन्हें वैतरणी के पार उतारेगा ?

भाँडिन : कुल के संस्कारों का अधिकारी होता है पुत्र।

कमाल शेर : संस्कार संस्कृति का सार है। पुत्र संस्कृति का रक्षक होता है।

(भाँडिन और कमाल शेर दोनों उठ कर खडे होते हैं।)

कमाल शेर : हमारा दु:ख एक ही है, एक ही है हमारी भूख। देखो महारानी, मैं अपना यह मुकुट, अपनी यह पगडी इस सिंहासन पर रखता हूं और तुम्हारे साथ दुहाई मांगने चलता हूं।

(मुकुट उतार कर सिंहासन पर रखता है और रानी का हाथ पकडता है।)

कमाल शेर : चलो, अभी भी अगर कोई साधु-संत, कोई जोगी, फ़कीर बचा हो तो उस के पास चल कर मन्नत मांगते हैं। मंदिरों, देवस्थानों, पवित्र जलकुंडों, पवित्र पेडों के आगे दिए जलाते हैं। पवित्र स्थानों में चीथड़े बांध कर मनौतियाँ माँगते हैं। शायद ईश्वर हमारी भी सुन ले।

(दोनों मंच पर चक्कर लगा कर अंदर वाले कमरे की ओर जाने लगते हैं)

दोनों : प्रभु सब से बडा मुकुटधारी
करता वह सब की रखवारी
वह दयावान है वह दाता
है वही सहायक वह त्राता

(संगीत की धुन बदलती है और लडकियों का दल मंगल गीत गाता और लडकियों की सी नृत्य-क्रीडा करता है)

लडकियाँ: माँ तीरथ तीरथ जाए तो बापू पूजे देवल
हाँ हाँ, बापु पूजे देवल
एक पुत्र दो हम को दाता, एक पुत्र दो केवल
हां हाँ, एक पुत्र दो केवल

सच्चे मन से ओ रखवैया
हम माँगें नन्हा सा भैया
सुन ले दैया भेजे भैया
सुन ले दैया भेजे भेया
हंसने और हंसाने को,
शोभा नित्य बढ़ाने को
शोभा नित्य बढ़ाने को,
शोभा नित्य बढ़ाने को
(गाना और नृत्य समाप्त होता है। संगीत की धुन बदलती है और साधु के वेश में मागुन प्रवेश करता है।)

मागुन : बम भोले अलख जगाए। आया हूं मैं जोगी राजा के आँगन में। जानता हूं क्या है राजा और रानी के मन में! एक पुत्र हो राज सिंहासन का अधिकारी, दूर करे जो मन की निराशा सारी। राजमहल को जो महकती फुलवारी बना दे। मन के सरोवर में कमल खिला दे।
(एक मसखरा उछलता हुआ आता है।)

मम्मा मसखरा: हा-हा-हा! जोगी, सचमुच के पहुंचे हुए हो या राजा-रानी के घावों को यों ही कुरेदने के लिए आए हो?

मागुन : बम भोलेनाथ की! ज़बान संभाल कर बे मसखरे! तू नहीं जानता है कुछ भी सिरफिरे। फिर अगर ऐसे ही बोला रे गंवार! कुल्हाडी से करूंगा तुझ पर वार।

मसखरा : हिश! चुप करो। न यहां पर राजा है और न है यह तुम्हारा घर। एक मसखरा है बस जो कूद-फाँद कर रहा है यहाँ पर। एक पाँव इधर है तो दूसरा उधर। पाया है तुम ने थोडा ज्ञान? खुली है क्या नज़र?

मागुन : अरे ओ बेखबर! रोंगटे खडे हो जाएँगे, जब कर दूंगा ज़बान बंद। आँखों के आगे छा जाएगा अंधेरा, घुटने कांपेंगे थर थर। तू है मदहोश, न पाई है दृष्टि और न ज्ञान। बस यूं ही चला रहा है ज़बान। कौन हूं मैं, यह तू क्या सकेगा पहचान?

मसखरा : हो शायद कोई हरमुख के गुसाईं। सुबह पहाड पर चढ़ना। शुरू

करके शाम वहीं पहुंच जाने वाले जहां से शुरू की थी चढ़ाई।

मागुन : लगता है गिनी-चुनी है तेरी साँसें। मसखरी छोड और ईश्वर का ध्यान कर। रानी यहाँ नहीं अगर तो चलता हूं मैं वापस।

(रानी के वेश में भाँडिन घबराई हुई सी आती है।)

मसखरा : नहीं महाराज नहीं! वापस तो हरगिज़ मत जाओ। लो, वो रानी चली आई। देखो, कैसे उस ने अपनी झोली फैलाई।

भाँडिन : महाराज! तनिक अपने चरण टिकाऐं। यह मसखरा नादान है, इस की बातों पर मत जाऐं। क्षमा करें इसे, दया करें मुझ पर। सामने आसन रखा है, विराजें उस पर।

मागुन : बोल रानी, वचन देगी ?

भाँडिन : कैसा वचन महाराज ?

मागुन : मैं तुझे पुत्र दूंगा रानी। नौ मास बाद तू उसे गोद में खिलाएगी। लेकिन ....

भाँडिन : लेकिन क्या महाराज ?

मागुन : बारह बरस बाद उसे वापस लेने आऊंगा। वचन दे कि वापस देगी उसे। बोल, देती है वचन ?

भाँडिन : सच कहते हैं महाराज ? आपकी कृपा से मुझे पुत्र होगा ? (उदास होते हुए) पर यह वचन कैसा ? दैंगे अगर पुत्र तो बारह बरस बाद वापस ले जायेंगे ?

मागुन : हाँ, बारह बरस बाद आऊंगा और उसे वापस ले जाऊंगा।

भाँडिन : बारह बरस! हे भगवान! बारह बरस तक बच्चे के किलकारियाँ मारने के दिन होते हैं। संगी-साथियों के साथ छुपन-छपाई खेलने के दिन। सहपाठियों के साथ बैठ कर अक्षर ज्ञान करने के दिन। बारह बरस तो उस के आगे पीछे ही डोलती फिरूंगी उस का मुख निहारती हुई। फिर मेरे कौन से अरमान पूरे हूंगे ? बारह बरस देखूंगी पुत्र की बाल लीला और आप आकर उसे ले जायेंगे। यह कैसी दया है ? कैसा दान ? मैं मानिनी तो ऐसे पुत्र के लिए विकल हूं जो बलवीर बनेगा, घर बसाएगा, राज-काज का सुख भोगेगा, नाम कमायेगा, वंश चलायेगा। बारह बरस तो उसे किलकारियों में ही बीत जाएंगे। बारह बरसों में वह कितना कुछ पाएगा ?

मागुन : अच्छा! विधाता अगर उसी ढंग से चलने लगे जिस ढंग से हम उसे चलाना चाहें तो जिस ने जन्म लिया है वह कभी मरेगा ही नहीं। लेकिन काल अटल है। समझी? (ऊंचे स्वर में यह पद गाता है)

एक जो न जनमता और एक जो न मरता
दुनिया तंग पड जाती, कौन कहां रहता?
एक जो न आता और एक जो न जाता
चक्की रुक जाती यह, कौन क्या खाता?

भाँडिन : जोगीराज, मैं पडती हूं पाँव, मौत का मत लें नाँव। या मुझे इस दुनिया से इसी छिन उठा लें, या फिर करें दया। मुझे बस एक पुत्र का वर दें। मेरे मन की अभिलाषा पूरी कर दें।

मागुन : दूंगा, पर सिर्फ बारह बरस के लिये। ले और गोद में खेल, खिला पिला। घुमा फिरा। बारह बरस के बाद आऊंगा और उसे ले जाऊंगा। कह, देगी वचन?

भाँडिन : मुझ से वचन मत मांगें। सात बेटियां हैं। जिसे मांगेंगे, दूंगी। पर कृपा करके एक पुत्र से मेरी गोद भरें।

मागुन : क्या करूंगा तेरी बेटियां लेकर? उन का अपना अपना भाग्य है। मुझे बस तेरा वचन चाहिये। बोल देगी? अब भी सोच ले। बारह बरस के बाद आऊंगा और उसे वापस ले जाऊंगा। बता?

भाँडिन : पुत्र जो देंगे तो वापस क्यों लेंगे भला? बारह बरस का यह वचन क्योंकर? समझ में नहीं आता कि क्या कहूं? जीभ अटक जाती है। जोगियों की बातें समझ में नहीं आती है। हे जोगी दयावान, दया करें, दया!

मागुन : सुन री ओ रानी! मेरे मन में दया उपजाने की क्यों है तूने ठानी? देख चुका हूं मैं यह संसार, यह है पूरा असार। यहां नहीं है किसी को रहना। फिर क्यों फंसाती है अपने आप को मायाजाल मैं। वचन दे तो मैं चला जाऊं। बारह बरस के लिये जो पुत्र चाहिये तो मैं अभी बुला लेता हूं उसे। नौ महीने बाद तेरी गोद भर जायेगी। नाम रखना उस का एकनंदुन।

भाँडिन : (धीरे धीरे खुश होते हुए) हाँ-आँ-आँ एकनंदुन ठीक रहेगा। बारह बरस बाद क्या होगा, किस ने देखा है? ठीक है, दे दे मुझे मेरा बेटा

... मेरा एकनंदुन!

मागुन : वाह! तो ले ही लिया मैं ने तुझ से तेरा वचन। आखिर फंस गई, डोल गया तेरा मन! बम भोलेनाथ की।

(जाता है और अंदर वाले कमरे में प्रवेश करता है। परदे के पीछे से सात लडकियां थालियों में जलते दिए लिए आती हैं। परदा पीछे को सरकता है। हाथों में थालियां लिए लडकियाँ माँ के इर्द गिर्द नाचती हैं। परदा भाँडिन को ओट में कर लेता है। लडकियां नाचती हुई सुलभ क्रीडा करती रहती हैं। थालियाँ नीचे रख कर वे एक दूसरे के हाथ पकड कर नाचने लगती हैं।)

कोरस और नृत्य गीत:

थाली भरी है यह वसंत की, भैया के देखने के लिए
थाली भरी है यह सोने की,
भैया के देखने के लिए
थाली भरी है यह चांदी की,
भैया के देखने के लिए

मंगल गीत: सातों बहनें चली हैं हम तो हँसती गातीं गातीं
जिस माँ ने है जना एकनंदुन,
उस की बलि जातीं

अल्पना गीत: थाली भरी है यह भात से,
कह दो किस के लिए
थाली भरी है यह बापू के लिए,
और किस के लिए
थाली भरी है यह खीर से,
कह दो री किस के लिए
थाली भरी है यह भैया के लिए,
और किस के लिए
भैया यह किस ने दिया री,
कह दो री किस ने दिया
भैया दिया है जोगीराज ने,
जोगी ने भैया दिया

जोगी यह किस वन का है री,
कह दो री किस वन का
जोगी तपोवन का है री,
जोगी है तपोवन का, गुसाईं आए हमरे घर
रहते हरमुख में हर-हर
या फिर अमरेश्वर में रे
ओम् नमो जगदीश्वर रे!
तोरे अंगों में चंदन लगायें,
कह दे कौन सी दीदी बलि जाए
ओरे ओरे, हमारे अकनंदुन!
कह दे कौन सी दीदी बलि जाए
बहनों के संग हँसे हँसाए,
बहनों के संग खेले खिलाए
ओ रे ओ रे हमारे अकनंदुना!
कह दे कौन सी बहना बलि जाए
(कोरस का प्रस्थान! संगीत की लय बदलती है। साधु के वेश में परदे के पीछे छिपा मागुन धीरे धीरे उठ कर खडा होता है। पहले उस का केवल मुँह दिखाई देता है। वह मंच के चक्कर लगाता है।)

मागुन : (अपने आप से) मोह-माया के जाल में भूले हुए हैं सब लोग। बारह वसंतों का रस लूट कर गंध में डूबे हुए। संसार की ऐसी न जाने कौन सी जडी बूटी सूँघ ली है इन्होंने, कि मुझे दिया वचन याद ही नहीं। अकनंदुन की किलकारियों में ही सब कुछ भुलाए बैठे हैं। अभी जाकर पुकारता हूं और देखता हूं क्या कहते हैं भला ?
(परदे के बाहर आता है और मंच के चार चक्कर लगा कर आवाज़ देता है)

मागुन : (ऊंचे स्वर में) बम भोले नाथ की! आया मैं जोगी राजमहल के अंदर। बारह बरस पहले का वचन रानी को याद दिलाना है। लगता है उसे वचन का पालन करना सिखलाना है। (पुकारता है) कहां है तू महारानी ?
(दूर से मसखरा दौडा दौडा आता है और दाएँ बाएँ देखता हुआ उसे

बातों में उलझाता है)

मसख़रा : अरे यह वही पहले वाला गुसाईं है या कोई रसिक ? किस वन से आए हो रे जोगी ? आँगन कैसे पार किया ? बैठक में कैसे पहुंचे ? घुसे किस दरवाज़े से ?

मागुन : ओ मसख़रे ! मूरख अज्ञानी। कुछ जानता भी है या मेरी चमत्कारी शक्ति की परीक्षा लेने की है तूने ठानी ? या फिर बनता है जान कर अनजान। अच्छा रानी कहां है बता ? छिप कर बैठी होगी कहीं सरहदों के पार।

(जोगी की आवाज़ सुन कर रानी भागी भागी आती है)

भाँडिन : जोगी मस्ताने ! कहीं तुम्हें कोई भ्रम तो नहीं है ? अभी कल ही तो तुम ने दिया था मुझे मेरा एकनंदुन। इतनी ही देर में बारह बरस कैसे हो गये ?

मागुन : अरे वाह, राज घराने के लोगों को अब बरसों और ऋतुओं के चक्र की भी याद नहीं रही। बारह बरस पूरे हो चुके हैं, रानी ! अब निभा अपना वचन। लौटा दे मेरा एकनंदुन !

भाँडिन : ओह, यह क्या कह रहे हो ? सुनते ही मेरा सिर घूमने लगा है। आँखों की ज्योति धुँधलाने लगी है। मस्ताने जोगी, मेरा तो दिल डूबा जा रहा है। टाँगें लडखडा रही हैं। कहीं आज सचमुच एकनंदुन का तेरहवाँ जन्म-दिन तो नहीं ?

मागुन : नहीं रानी, मुझे कोई भ्रम नहीं। बारह बरसों में तुझे ध्यान ही नहीं आया कि तुझे वचन भी निभाना है। जा बुला ले एकनंदुन को।

भाँडिन : जोगी मस्ताने ! राज मांगोगे, राज दूंगी। ताज मांगोगे, ताज दूंगी। घर की सारी धन दौलत, खेत-ज़मीन-बाज दूंगी। जो माँगोगे, सो दूंगी। पर एक एकनंदुन को मुझ से मत मांगो, मत मांगो !

मागुन : नहीं चाहिये जोगी को तेरा राज ताज बाज। बस ज़बान का दिया वादा पूरा करो। बारह बरस के लिये दिया था सो पूरे हुए। अब लौटा दो उसे।

भाँडिन : हाथ जोडती हूं, पाँव पडती हूं तुम्हारे। हे दयावान, दया करो। छिमा करो अपराध हमारे। मेरा अबोध बालक पाठशाला गया है, सहपाठियों के साथ खेलने।

मागुन : पुकार तो उसे। अभी आ जायेगा दौड कर चाहे सात ताले क्यों न लगे हों द्वार पर।

भाँडिन : बालक है, कहीं दूर निकल गया होगा। अभी तो उस के ओठों पर मेरा दूध लगा है। भरी दोपहर को ही रात मत बना दो। उस के बदले मैं अपने आप को करती हूं तुम्हारे हवाले। अभी मैं ने एकनंदुन का किया कुछ नहीं देखा। कौन सी कमाई ला कर दी है उस ने मुझे ? कौन सा राजसुख भोगा है उस ने ? किन नगरों, किन गाँवों को जीत कर आया है ? अभी तो वह बच्चों के खेलों में ही मगन है। लोरियाँ सुन सुन के सोता है। बाल कथाऐं सुन कर खुश होता है। कभी रूठता है, कभी शरमाता। कभी झूठ को ही सच मान लेता। अभी वह बचपन की उछल कूद में लीन है। अभी दाइयाँ गोदी में दुलराती हैं उसे। मस्ताने जोगी, इसी अबोध बालक को माँग रहे हो मुझ से ?

मागुन : होश में आजा, रानी! वचन नहीं निभायेगी तो सर्वनाश हो जाएगा। सुख-सुहाग, कोख, राजपाट, धन संपत्ति, ठाठ-बाट, कुछ भी नहीं रह पाएगा। सारा राजमहल ईंट ईंट ढह जाएगा। बुला ले एकनंदुन को।

भाँडिन : सुन कर तुम्हारे ये कुबोल, कलेजा मेरा छलनी हो जाता है। इतना संत्रास सहने के बाद धरती क्यों नहीं फटती और मैं उस में समाती।

मागुन : बुलाती है एकनंदुन को या नहीं ? बुला ले उसे, बुला।

भाँडिन : अपना अंग अंग तुम्हें बलि दूंगी, जोगी मस्ताने। कृपा करो! मेरा सब कुछ ले जाओ, पर पुत्र को कैसे दूँ ले जाने ?

मागुन : जोगी की लेती है परीच्छा, रानी ? बुला ले एकनंदुन को। बुला!

भाँडिन : मेरे इकनंदुन, आ जा! दूध मलाइ खा जा।

(नटुवे परदा लिये मंच पर आते हैं। मागुन दर्शकों की ओर अपनी पीठ करता है और भांडिन भी, जिस से यह आभास होता है कि एकनंदुन परदे के पीछे खडा है।)

मागुन : ले, आ गया मेरा एकनंदुन। अब बुला अपनी सातों बेटियों को। कह दे उन्हें, इसे दूध से नहलाएँ, इस के तन को स्वच्छ जल से धोयें।

धो कर इस के अंग अंग को कर दें दूध सा उजला।
(भाँडिन परदे के नज़दीक जाती है। परदा कुछ और नीचे सरक आता है।)

भाँडिन : (परदे के पास से) आ जा मेरे एकनंदुन, तुझे गले लगाऊं। छिन छिन जीती हूं मैं तेरा ही मुखडा निहार कर। आ, तुझ पर रखूँ अपने आप को वार कर।

मागुन : छोड यह रोना-कलपना, यह गले लगना-लगाना। बुला ला बेटियों को, इसे है जल्दी नहलाना।

भाँडिन : भारी भूल हुई जो मैं दे बैठी तुम्हें वचन। बेटियो, जल्दी से आओ और अपने भाई को नहलाओ।
(सातों लडकियाँ परदे के दूसरी ओर चली जाती हैं। भाई के चारों ओर मंडल बना कर उसे नहलाने का अभिनय करती है।)

भाँडिन : इसे वापस भेजने के लिए तैयार करना है। दोष है मेरा अपना वचन दिया है जोगी को, अब है तडपना!

मागुन : हां हाँ, नहलाओ, धुलाओ। पवित्र स्नान कराओ। माथे पर चंदन का तिलक लगाओ।
(लडकियां परदे के पीछे वैसा ही करने का अभिनय करती हैं)

मागुन : चल आगे, रानी! हाथ में मेरी यह कुल्हाडी ले।
(कंधे से कुल्हाडी उतार कर परदे के पीछे चला जाता है।)
अब इस का अंग अंग काट। अलग कर दे बोटी बोटी।
(लडकियों की चीख निकल जाती है। वे एक मंडल बनाती है और मंचाग्र की ओर आती हैं सिर झुका कर अनुनय-विनय करती हैं।)

लडकियाँ: (समवेत स्वरत में) हाय रे, हाय रे! हाय रे!

भाँडिन : बस करो! बस करो! अब और कुबोल मत बोलो। करने ही हैं तो कुल्हाडी से मेरे टुकडे टुकडे कर डालो, मुंह से उफ भी नहीं निकलेगी।

मागुन : क्या तूने वचन नहीं दिया है?

भाँडिन : वचन दिया है तो यह रहा एकनंदुन, ले जाओ इसे अपने साथ।

मागुन : इस रूप में? क्या इसी रूप में मैं ने इसे तुम को दिया था? बारह बरस यह तुम्हारा रहा। पहले इत्ता सा था, फिर इतना हो गया और

आज इतना। आ चल, इस के अंग काट और उन्हें चूल्हे की आंच पर पका, बडी भूख लगी है।

लडकियाँ: हाय हाय हाय हाय! ओह-ओह! आह, आह, आह!!
छीनो न भैया को हमारे, मस्ताने जोगी
छीनो न भैया को हमारे!
हम पर भी कर लो दया रे,
मस्ताने जोगी! छीनो न भैया को हमारे
उस को हमारी उमर लग जाए
पैया पडें हम तुम्हारे।
मस्ताने जोगी पैया पडें हम तुम्हारे।
(एकाएक सिर और बांहें घुमा घुमा कर ज़मीन पर पटक पटक कर शोक-संतप्त स्वर में क्रंदन करती हैं।)
छीनो न भैया को हमारे,
मस्ताने जोगी, न छीनो भैया को हमारे
(भाँडिन अपने कान बंद करती है। उसे चक्कर आ जाता है।)

भाँडिन : हाय, मेरे कान बहरे क्यों नहीं हो जाते! क्यों नहीं यह धरती फट जाती और मैं उस में समाती! क्यों नहीं यह राजमहल ईंट ईंट करके ढह ढह जाता?

मागुन : (क्रोध में आकर) छोड यह रिरियाना। मैं जो कहूं, वही कर। वरना शाप लगेगा मेरा, सब कुछ भस्म हो जाएगा तेरा। सुहाग का और कोख का सुख, राज-पाट सब नष्ट हो जायेगा। काट इस की बोटी बोटी।

भाँडिन : होश की बात करो रे जोगी! एक माँ और अपने ही हाथों अपने बेटे का अंग अंग काटे, यह वह कैसे सहन कर सकेगी? तुम्हें इतनी भी खबर नहीं?

मागुन : वाह री माँ! पुत्र की माँ! हा-हा-हा! बारह बरस तक एकनंदुन को पालती पोसती रही, फिर भी पुत्र की भूख तृप्त नहीं हुई। छाती से अलग करो तो कैसा बच्चा और कैसी बच्चे की माँ? (क्रोध में आकर) इसे पकड रख। अपने वचन से मत मुकर। पकडे रख पीछे से। बम भोले नाथ की! हँह!

(लडकियाँ फिर एक बार बाँहें आकाश की ओर उठाती हैं और हाथ पटक- पटक कर शोक भरे स्वर में विलाप करती हैं।)

लडकियों का समवेत गान :

न मारो जोगी भैया को हमारे
पैयां पडे हम तिहारे!
एक ही हमारा यह भाई दुलारा
आँखों का तारा यह भाई हमारा
इस को न मारो जोगी, कर लो दया रे!
न मारो न मारो जोगी भैया को हमारे
पैयाँ पडे हम तिहारे!

भाँडिन : (रोते हुए) यह तुम ने क्या कर दिया जोगी? यह तुम ने क्या कर दिया?
कुल्हाडी चला दी मेरे कलेजे पर! मासूम बच्चे का वध करवाया!
(लडकियाँ एक दूसरे के कंधों पर बाँहें रख कर और सिर झुका कर शोक भरे स्वर में करुण विलाप करती हैं। परदे के पीछे से जोगी जैसे कटे हुए अंगों को दिखाता है।)

लडकियों का कोरस :

क्यों मार डाला तुम ने भैया हमारा?
छोटे से भैया को क्यों मारा?

मागुन : अब इसे हाँडी में डाल कर पका। जल्दी कर! देख नून तील ठीक डाला है या नहीं!
(भाँडिन परदे के बाहर आती है और पछाड खा कर गिर जाती है। फिर रोते रोते गाती है।)

भाँडिन : कौन सी माँ अपने बेटे को मारे?
अंग अंग आप काट डाले?
कौन सी माँ उसे चूल्हे पर चढ़ाए?
स्वाद चखे और पकाए?

मागुन : कलछी ठीक से चला। जल्दी से पका कर तैयार कर।
(भाँडिन उठ कर परदे की ओर जाती है।)

भाँडिन : होश उडा कर, ज़हर खिला कर, तड़पा तड़पा कर मारा!

मागुन : अब जा और ग्यारह सकोरे ले आ। और बुला लडकियों को। बुला उन्हें!

भाँडिन : आओ बेटियो, आओ! भाई का शुभ चाहो।

मागुन : जल्दी कर जल्दी! काँपने थरथराने का यह स्वाँग मत कर। ग्यारह सकोरों में परोस इसे। अपने लिए, राजा के लिए, सात बहनों के लिए, और हाँ, एक सकोरा मेरे लिए भी। अभी एक सकोरा रहता है, इस में एकनंदुन के लिए परोस! परोस लिया ना?

(परदे के पीछे चार लडकियाँ दो हाथ में दो सकोरे उठाने का अभिनय करती हैं और तीन लडकियाँ एक एक सकोरा लिए मंचाग्र पर आती है। सकोरे लाने का अभिनय करती हुई वे शिथिल गति से नाचती और शोक भरे स्वर में गुनगुनाती हैं। भाँडिन परदे के पीछे से रोती हुई आती है।)

भाँडिन : अपने ही बच्चे का माँस पकाए, ऐसी भी माँ है कौन? आप परोस आप न्योतने आए, ऐसी भी माँ है कौन?

मागुन : हा हा! छोड यह हाँफना-काँपना, चल आगे।

(मागुन स्वयं पूरी तरह से परदे की ओट में चला जाता है।)

मागुन : बुला अब एकनंदुन को! अरी देखती क्या है? आवाज़ दे! अरी पुकार!

(परदा मागुन को सिर से पाँव तक छिपा लेता है।)

भाँडिन : किसे आवाज़ दूं? किसे पुकारों? आप ही अपने बच्चे का अंग अंग काट चुकी हूं। आप ही चूल्हे पर चढ़ाया और पकाया है। फिर किसे पुकारों?

मागुन : *(परदे के पीछे से अपना चिमटा दिखाते हुए)* पुकार अपने बेटे को। आवाज़ दे एकनंदुन को। सकोरे में यह नैवेद्य उसी के लिए है।

भाँडिन : किसे पुकारूं? किसे आवाज़ दूं? जीभ तालू से चिपक जाती है। कंठ से आवाज़ नहीं निकल पाती। जिसे जीते जी मार डाला, वह क्या जी उठेगा?

मागुन : री तू आवाज़ तो दे! देख ले, जवाब में वह भी आवाज़ देगा।

भाँडिन : तपे हुए तवे पर बिठाया मुझे! यह कैसे दाँव पर लगाया मुझे? आ

मेरी आँखों के तारे, मेरे दुलारे एकनंदुन आ!
(मागुन परदे को अपने साथ लेता हुआ अंदर वाले कमरे में चला जाता है। लडकियाँ अपने हाथों की ओर यूं देखती हैं, मानो उन पर मिट्टी के सकोरे रखे हुए हूं।)

भाँडिन : एकनंदुन, मेरे लाल! आ जा!
(दर्शकों के बीच से एकनंदुन की आवाज़ आती सुनाई देती है।)

आवाज़ : क्या है माँ?

भाँडिन : एकनंदुन, तू कहाँ है?

आवाज़ : कहाँ नहीं हूं माँ! यहाँ वहाँ, सब कहीं खेल रहा हूं।

भाँडिन : यह कौन है? यह सब था मेरी आँखों का भ्रम। मेरे लाडले एकनंदुन! मेरे लाल! यह क्या? जोगी कहाँ है? सकोरे कहाँ गए?

मम्मा मसखरा: वह देखो, वहाँ से चला गया जोगी, वहाँ से। वो वहाँ है। वह कहाँ नहीं है? आकाश मार्ग से चला गया वो, लीला दिखला कर और गहरी बात समझा कर।
(मसखरा गाता है। लडकियाँ माँ के इर्द गिर्द नाचती हैं।)
लीला दिखला कर, कैसी गहरी बात सुझा कर
जोगी चला गया
माया के परदों को काट गिरा कर, जोगी चला गया
बात पुरानी नई तरह समझा कर, जोगी चला गया
चढ़ा कसौटी पर ममता को उस ने परखा आ कर
जोगी चला गया!
(लडकियों के बीच नाचते नाचते भाँडिन चक्कर खा कर गिर पडती है। नाटक रुक जाता है। लडकियों की भूमिका कर रहे अभिनेता उस के चारों ओर जमा हो जाते हैं। मसखरे को छोड कर बाक़ी सभी घबरा जाते हैं।)

मम्मा मसखरा: वाह, क्या कमाल है! क्या कमाल है!
(लडकियाँ बने अभिनेता पंखा झेलते हैं। इतने में मागुन 'प्रेमी गुसाई' का वेश धारण किए आता है। पत्नी को अचेत पडी देख वह घबरा जाता है और उस का सिर अपनी गोद में रख लेता है। तभी भाँडिन को होश आ जाता है।)

मागुन : क्या बात है ? चक्कर आ गया था क्या ? तुझे नाचना नहीं चाहिए था!

भाँडिन : क्यों कैसा रहा ? नाटक करना आया या नहीं ?

मम्मा मसख़रा: कमाल कर दिखाया। सचमुच कमाल। गुपाली को भी मात कर दिया।

कमाल शेर: हमें क्या पता था हमारे बीच ऐसी कलाकार भी है।

(मागुन आँखों में आए आँसू पोंछ लेता है। सबी भाँडिन के इर्द गिर्द जमा हो जाते हैं।)

भाँडिन : (उठ कर खडी होती है) यह क्या ? तुम ने अपने कपडे नहीं बदले! (गुस्से में) अभी ख़त्म नहीं हुआ तुम्हारा जश्न ?

मागुन : नहीं, नहीं। अभी नहीं।

भाँडिन : मगर क्यों नहीं ? सब को अपने अपने घर जाना है।

मागुन : नहीं, अभी मुझे नाटक खेलना है।

भाँडिन : अब क्या खेलना है ?

मागुन : 'प्रेमी गुसाई' वाला स्वाँग। 'एकनंदुन' का स्वाँग उसी में पूर्णता पाता है।

कमाल शेर: और मालकिन क्या गुपाली बनेंगी ?

भाँडिन : नहीं, हरगिज़ नहीं। शमीमा को गुपाली बनते देख मुझे हमेशा जलन होती रही है। मैं नहीं करूंगी गुपाली का पार्ट। बहुत हो चुका जश्न। अब बंद करो।

(रसोई के कमरे में चली जाती है। सब इस आदेश की प्रतीक्षा में हैं कि वे क्या स्वाँग करें या घर जाएँ।)

मागुन : नहीं, जश्न जारी रहेगा। चलो साज़ बजाओ। 'गुसाई' वाले स्वाँग का संगीत शुरू करो।

(मागुन ने साधु की वेशभूषा के ऊपर ही शाल ओढ लिया है। सिर पर पगडी रखी हुई है जिस पर सलमे-सितारें टंके हैं। शहनाई की धुन बजती है। नटुवे और कोरस का काम कर रहे अभिनेता वैरागियों के भेस बना कर आते हैं। मसख़रों की पंक्ति भी आती है। उन में से तीन के सिर मुंडे हुए हैं।)

मम्मा मसख़रा: मैं तो कहता हूं मालकिन ने आज सचमुच कमाल कर दिखाया। यह

बेमिसाल अदाकारी ज़िन्दगी भर याद रहेगी। सलाम तुम्हारी कला को। मेरे साथियों की ओर से भी सलाम।

कमाल शेरः (मागुन से) यह तो बताएँ गुपाली कौन बनेगा?

मागुन : कोई भी बन सकता है। जो बनना चाहता हो, उसे बोलना ही कितना है। पर हाँ ....

कमाल शेरः तो ठीक है। (एक नटुवे से) चलो भाई, तुम गुपाली का भेस बना लो। जल्दी से!

(दो नटुवे हाथों में एक परदा लिये आते हैं और मंच की ओर जा कर उसे फैलाते हैं। मागुन मंच पर इधर उधर चक्कर लगाता है मानो किसी को ढूंढ़ रहा हो। तीन मसख़रे आकर उसे विस्फारित आँखों से देखते हैं। वे जैसे मागुन के बारे में ही बात कर रहे हैं।

पहला मसख़राः (मागुन को ऊपर से नीचे तक घूरते हुए।) अरे! ये कौन है?

दूसरा मसख़राः हां भई, ये कौन है? जाने कौन है?

तीसरा मसख़राः हा-हा-हा! हो-हो-हो!!

पहला मसख़राः ये? हा-हा-हा-हा! अरे, तू इसे नहीं जानता?

दूसरा मसख़राः नहीं तो! ये यहां कभी दिखलाई नहीं दिया।

तीसरा मसख़राः अरे यही तो है पराये देस का मुर्गी चोर!

दूसरा मसख़राः चुप बे, मुर्गी चोर होता तो क्या यह शाल ओढ़ लिया होता? पगडी पहनी होती।

तीसरा मसख़राः अरे हाँ, तब तो इस के कंधे पर बंदूक होती, हाथ में वॉकी-टाकी!

(पहला मसख़रा मागुन की ओर एकटक देखता है।)

पहला मसख़राः अरे यह तो वो है! वही ना?

दूसरा मसख़राः कौन वही? मैं नहीं जानता इसे!

पहला मसख़राः अरे ये वही दूल्हा है जो दुल्हन को दखे बिना ही उडन-छू हो गया था।

(बडा मसख़रा उसे लात मारता है।)

तीसरा मसख़राः बस कुटम्मस ही तुम्हारी दवा है, बेवकूफो! होश करो।

दूसरा मसख़राः तो फिर ये कौन? चलो, चल कर इसी से पूछते हैं।

पहला मसख़राः तू ही पूछ। इस की आंखें तो लपट की तरह जल रही हैं। अगिया बैताल की तरह जिस के सिर पर आग जलती है।

तीसरा मसख़रा: ना भाई, तू ही पूछ। लगता है कोई राहगीर है।

दूसरा मसख़रा: राहगीर होता तो यूँ देखता? तू ही जा कर पूछ ना।

पहला मसख़रा: अरे भाई, तुझी से पूछते हैं। तू कौन है?

(मागुन चुपचाप एक दिशा में टकटकी लगाए देखता है।)

दूसरा मसख़रा: ऐ भाई, यहाँ मारेंगे। यहाँ दहशतगर्द घूमते हैं। कौन है तू?

पहला मसख़रा: ऐसा मत कह, बेवकूफ। हट पीछै।

दूसरा मसख़रा: अरे-रे, यह कैसी सूरत बनाई है इस ने? यह कैसा चेहरा है? देखो तो इस की आँखें कैसे झर-झर झर रही है। ऐ, अरे भाई, तू है कौन?

मागुन : (परदे की ओर इशारा करते हुए) वहाँ दिखलाई दे रही है एक सूरत।

दूसरा मसख़रा: क्या कहा, 'मूरख'? अबे मूरख होगा तू, तेरा बाप!

पहला मसख़रा: क्या हुआ तुझे? इस ने वह नहीं कहा। ध्यान से सुन, ध्यान से।

तीसरा मसख़रा: बताता क्यों नहीं तू कौन है?

मागुन : वहाँ दिखलाई दे रही है एक सूरत।

तीसरा मसख़रा: सूरत! हा-हा-हा! तुझे भ्रम तो नहीं हो रहा? सूरत यहाँ नहीं। सूरत बहुत दूर है, समंदर के किनारे।

पहला मसख़रा: अबे तू पीछे हट। हाँ तो भाई, मैं पूछता हूं, तू कौन है?

मागुन : एक सूरत, एक मूरत! बस एक झलक। अपन दर्शन कर लें तो जाएँ!

पहला मसख़रा: बावरा है, पूरा बावरा।

दूसरा मसख़रा: पागलखाने से भाग आया कोई पागल।

तीसरा मसख़रा: अरे भाई, यहाँ डाइन रहती है। शाम ढले शहर और गाँव में लोगों से चिमटती है। वह तुझे खा जायेगी। लंबे लंबे नाखून हैं उस के, तांबे का सा चेहरा, सफेद कपडे।

पहला मसख़रा: पीछे को मुडे पाँव, कंधों तक लंबे कान, पराए मुल्क से आई है। पकडेगी तुझे, खा जायेगी। किसी खाई खंदक में धकेल देगी। जा, अपनी राह ले।

मागुन : दर्शन कर लें तो जायें।

तीसरा मसख़रा: डाइन! हू-हू, हा-हा-हा! उस के सामने ठहर सकेगा?

मागुन : हमारा क्या बिगाड सकती है ? हमें दिखाई दी एक सुंदर मूरत। दर्शन कर लें तो जाएँ।

(दो मसख़रे कुछ देर चुप रहते हैं, फिर उछल उछल पडते हैं।)

तीसरा मसख़रा: ज़रा चुप तो करो। देखते नहीं ये कितना संजीदा है ?

दूसरा मसख़रा: क्या है ?

तीसरा मसख़रा: संजीदा!

दूसरा मसख़रा: तभी इस ने बैरागियों का भेस बनाया और दुशाला ओढ रखा है।

तीसरा मसख़रा: अरे गुसाईं! जा, यहाँ कोई सूरत मूरत नहीं।

मागुन : दर्शन कर लें तो जायें।

पहला मसख़रा: (गुस्से में) यहाँ खौफ़ और ख़तरा है।

(अचानक दो तरफ से गोलियाँ चलने की आवाज़ सुनाई देती है, जो कहीं नज़दीक से आती हुई प्रतीत होती है। कहीं आसपास से।)

दूसरा मसख़रा: क्रास-फायरिंग!

आवाज़: होशियार!

दूसरी आवाज़: हुश्श! क्लाश्निकोफ चल रही है।

कमाल शेर: होशियार! नीचे लेट जाओ।

आवाज़: चुपचाप बैठे रहो। मुँह से आवाज़ तक न निकले।

(चुप्पी छा जाती है। स्वाँग में भाग ले रहे अभिनेता भाँडिन को घेर लेते हैं और फ़र्श पर पसर जाते हैं। एक अन्य समूह में परदा लिये हुए नटुवे और गुपाली बनी नटुआ अपनी अपनी जगह पर बैठ जाते हैं। अकेला मागुन अपनी जगह खडा चारों ओर दृष्टि घुमाता है मानो कुछ ढूंढ़ रहा हो। चुप्पी। कुछ देर बाद क्रॉस-फायरिंग रुक जाती है और धीरे धीरे सब सिर उठाते हैं, फिर आहिस्ता से उठ कर बैठते हैं।)

आवाज़: हो गए शांत!

भाँडिन : (छाती पीटती हुई) हाय मैं मारी गई! बाडी के चारों ओर हमारा नुंदा दीवारों की ओट में गश्त लगाते हुए चौकसी कर रहा था। यह क्रास-फायरिंग कहीं उसी के साथ तो नहीं हुई ?

(एकाएक भाँडिन उठती है और चिन्ता से व्याकुल होती हुई दरवाज़े से बाहर चली जाती है। एक भाँड लडका उस के पीछे हो लेता है।)

तीसरा मसख़रा: अरे घर की मालकिन कहाँ चली गई ?

कमाल शेर: (मागुन से) क्यों जी, हम भी घर चले जाएँ ? सब को फ़िक्र लग रही होगी !

(मागुन कोई जवाब नहीं देता। मसख़रे धीरे धीरे उठने लगते हैं।)

दूसरा मसख़रा: क्यों जी, घर जाएँ क्या ? गोलियाँ चल रही हैं।

मागुन : खौफ और खतरा हमारा क्या कर सकता है ? हमें तो दिखाई दी एक सूरत, एक सुंदर मूरत। दर्शन कर ले तो जाएँ।

पहला मसख़रा: उठो भाई, दोबारा शुरू करते हैं। ख़त्म करके ही जाते हैं। (बिना किसी उत्साह के उठते हैं।)

दूसरा मसख़रा: ऐ जोगी ! अरे भाई गुसाईं ! तू आया कहां से और कहाँ जाएगा ?

(मागुन ऊंचे स्वर में ललद्यद का पद गाता है जिस से सब की हिम्मत बंधती है। डरते डरते अभिनेता स्वाँग को जारी रखते हैं।)

मागुन : सीधी राह चला आया, जाऊंगा सीधी राह चला,
चलते चलते बीच सेतु पर आ कर मेरा दिवस ढला।
जेब टटोली, देख फूटी कौडी भी तो थी न वहाँ,
पार उतरने को मैं नाव तरावा दूँ क्या, कहो भला ?

पहला मसख़रा: अच्छा, तो तू ख़ाली हाथ चला आया है ?

तीसरा मसख़रा: जिस के पास नाव-तरावे के लिये कौड़ी भी न हो, तो दर्शन कैसे करेगा ? फोकट में क्या ?

मागुन : जो कुछ हमारे पास है, दे देंगे। दर्शन कर लें तो जायें।

दूसरा मसख़रा: बता क्या है तेरे पास ? क्या देगा, बता ?

मागुन : आंगों में मलने के लिये शमशान की राख। खाने के लिये सारी दुनिया का गम। बिछाने के लिये पहाडों की चोटियों पर पडी बर्फ। रमने के लिये शून्य। पीने के लिये घुँट-दो घूँट भंग। और मारने के लिये दम।

दूसरा मसख़रा: ये सारी चीज़ें तू अपने ही पास रख। ये तुझे ही शोभा देंगी।

पहला मसख़रा: अरे भाई, इस से तो एक चुटकी नसवार भी नहीं मिलने की। बेकार में हमारा वक़्त बर्बाद कर रहा है।

तीसरा मसख़रा: आओ, मैं इस से पूछता हूँ, ये कोई राह भूला लगता है।

पहला मसख़रा: राह भूला और ये ? अरे गुसाईं, तुझे सूरत मूरत दिखाई दी थी।

कहाँ भला ?

(मागुन परदे की ओर इशारा करता है, तीनों मसख़रे हँसते हैं।)

तीसरा मसख़रा: चल, मैं उस से बात करता हूँ। (परदे के पास जाकर) अरी गुपाली, प्रेमी कहता है दर्शन कर लें तो जायें।

गुपाली : (परदे के ऊपर से मुँह दिखाते हुए) इस से कहो गायों का जो दूध दुहा था, सुबह सवेरे सारा बेच दिया।

मागुन : दूध पर बछडों का अधिकार है। हमें नहीं चाहिये। बस, दर्शन कर लें तो जायें।

मसख़रा: री गुपाली, ये कहता है दर्शन कर लें तो जायें।

गुपाली : पूछो, मुझे साथ ले जायेगा ?

पहला मसख़रा: यह कैसे हो सकता है ? ज़रा पूछ कर देख।

तीसरा मसख़रा: गुसाईं! गुपाली पूछती है मुझे साथ ले जायेगा ?

दूसरा मसख़रा: अबे, तुझे नहीं, इस गुपाली को! गुपाली को साथ ले जायेगा ?

मागुन : अपने तन पर भस्म रमाएगी ?

दूसरा मसख़रा: वाह! अपने चंद्रमुख को राख मल कर क्यों बिगाडेगी ? यह कहता है तन पर भस्म रमाएगी ?

गुपाली : वह भी कर लूँगी।

पहला मसख़रा: फी-फी-फी! राख मलेगी ? अपना रूप बिगाडेगी ? वह भी करेगी ? फी-फी!

तीसरा मसख़रा: गुसाईं, ये वह भी कर लेगी।

मागुन : सोने ज़ेवर का त्याग करेगी ?

पहला मसख़रा: हरगिज़ नहीं। सब कुछ मानेगी, पर यह बात नहीं।

दूसरा मसख़रा: औरतें भला कभी सोना ज़ेवर पहनना छोडती हैं ? कभी नहीं। फिर भी पूछ लेते हैं। गुपाली, सोना-ज़ेवर पहनना छोड देगी ?

गुपाली : वह भी करूंगी।

पहला मसख़रा: वाह, स्वीकार ही स्वीकार। किसी बात से इनकार नहीं। सुन लिया ना गुसाईं। वह भी करेगी।

मागुन : लंगोटी बांधेगी ?

दूसरा मसख़रा: फी-फी-फी-फी! हा-हा-हा-हा! (हँसता है।)

तीसरा मसख़रा: किसी सूरत में नहीं। बचपन से जवानी तक पूरे तन को ढाँपती आई

है और अब लंगोटी पहन कर निकलेगी ? नंग-धड़ंग घूमेगी ?

दूसरा मसख़रा: गुपाली, पूछता है लंगोटी पहनेगी ?

गुपाली : वह भी कर लूँगी।

तीनों मसख़रे: हैं! (तीनों भौंचक्के हो कर नीचे बैठ जाते हैं। फिर कुछ गंभीर बनने का अभिनय करते है।)

पहला मसख़रा: तो फिर बाकी क्या रहा ?

दूसरा मसख़रा: अरे, गुपाली तो जोगन बन गई।

तीसरा मसख़रा: फिर भी इसे बताते हैं।

पहला मसख़रा: अरे गुसाईं, यह तो वह भी कर लेगी।

मागुन : बीहड़ों-बियाबानों, कगारों-कछारों, पहाडों-चटानों में घूमेगी ?

दूसरा मसख़रा: ये कौन सी भला पीछे पड गई ?

तीसरा मसख़रा: नहीं-नहीं, यह बात तो मान ही नहीं सकती। वहां क्या इसे भूखों मरना है ? कहीं पाँव फिसला नहीं कि हड्डी पसली चूर हो जाएगी।

पहला मसख़रा: री गुपाली! पूछता है जंगलों, पहाडों, बियाबानों में घूमेगी ?

गुपाली : वह भी करूंगी।

पहला मसख़रा: लो सुनो, वह भी करेगी। तब फिर बाकी क्या रहा ?

मागुन : तब तो दर्शन कर लेंगे और जाएँगे।

तीसरा मसख़रा: ले भई, कर ले दर्शन। मैं इस परदे को ज़रा नीचे खिसका लेता हूं। थोडा सा नीचे, धीरे धीरे। ले, अब देख ले सूरत। (मसख़रा परदे को थोडा नीचे खिसकाता है। परदे के पीछे गुपाली दिखाई देती है।)

तीसरा मसख़रा: यह रही वो सुंदर सूरत-मूरत। (परदा फिर से ऊपर चढा लेता है।) कर लिये दर्शन ? अब बता गुसाईं, तू कहां जायेगा ?

मागुन : (ललद्यद का पद गाते हुये)

चलते आये हैं और चलते ही जाना है
चलना है दिन और रात
आए जहाँ से हैं लौट वहीं जाना है
कुछ नहीं तो क्या है फिर बात ?

(पद सुन कर एक मसख़रा भौंचक्का सा दूसरे की गोदी में जा कर बैठता है और तीसरा हकलाया सा उन की ओर देखने लगता है।)

दूसरा मसख़रा: और गुपाली को कहाँ ले जायेगा ? किस रास्ते से ?

मागुन : (ललद्यद का एक और पद गाते हुए)
आई हूँ मैं किस दिशा और किस पथ से
किस पथ से जाना है मुझ को, क्या जानूं
पर दाय अंत में वहीं मिलेगा मुझ को
इस श्वास-मात्र में सार-सत्त्व है कितना
(मसख़रे अपने हाथ पर फू-फू करते हुये फूंक मारते हैं।)

पहला मसख़रा: (धीरे से) गई! अब तो गुपाली गई! गुसाईं, अब हम गुपाली को कहाँ ढूंढ़ेंगे ? कहाँ उस का पता लगाएँगे ? बता।

मागुन : इस देह में खोज उसे तू
यही देह है आत्म-स्वरूप
लोभ-मोह से निवृत्ति पा
पूर्ण-प्रकाशित होगा इस का रूफ

दूसरा मसख़रा: अब तो तूने कर लिये दर्शन। कर लिये ना ? अब बता गुसाईं कि कैसी है गुपाली ?

मागुन : वही मातृरूप में पय दे
भार्या रूप वह धरे विशेष
माया रूप में प्राण वह हरे
शिव है गूढ़-चीन्ह उपदेश - चीन्ह उपदेश – चीन्ह उपदेश
(दो मसख़रे मागुन के सामने हाथ जोड कर खडे हो जाते हैं।)

तीसरा मसख़रा: गुसाईं! यह तो बता गुपाली क्यों जाये तेरे साथ ? उस से अगर पूछें तो वो भला क्या कहेगी ? बता तो सही!

मागुन : भिन्न समझ कर नेह लगाया
तुझे ढूंढ़ते डूबा दिन
तुझ को जब अपने में पाया
तू-मैं, एक हुए उस छिन

पहला मसख़रा: समझ में नहीं आता गुसाईं कि तू किस दीन का है, किस धर्म का ?

मागुन : शिव है कण कण में विद्यमान
क्या हिन्दू है क्या मुसलमान

(गुपाली, जो परदे के पीछे ख़ड़ी है, परदे के ऊपर से अपना मुंह दिखाती है।)

दूसरा मसख़रा: अच्छा गुसाईं, तू ने तो गुपाली को देख लिया। अब ये भी तुझे देख ले। ले, इस परदे को धीरे-धीरे कुछ नीचे सरकाता हूँ। तू भी इसे अपना मुँह दिखा। मतलब कि दर्शन दे।

(मसख़रा परदे को नीचे सरकाता है। दूसरी ओर से दो नटुवे दूसरा परदा लेकर आते हैं और मागुन के पीछे जा कर खडे हो जाते हैं। मंचाग्र पर एक छोर पर मागुन और उस के ठीक सामने वाले छोर पर गुपाली है। दोनों दर्शकों को स्पष्ट दिखाई देते हैं।)

मागुन : इस रंगमंच पर भिन्न सभी को पाएगा
तू सब कुछ सहन करेगा तो पाएगा सुख
तू क्रोध-ईर्ष्या-बैर मिटा जो पाएगा
तब कहीं दिखाई देगा तुझ को शिव का मुख
शिव का मुख - शिव का मुख – शिव का मुख -

(मागुन अभी यह पद गा ही रहा होता है कि उसे परदे की ओट में ले लिया जाता है और मंच-पार्श्व में धीरे-धीरे ऊपर उठा लिया जाता है। गुपाली और अन्य पात्र उसी की ओर देखते हुए कुछ पग उस के पीछे पीछे जाते हैं। परदा मागुन को अपनी लपेट में छिपा लेता है और उसे अंदर वाले कमरे में पहुँचा दिया जाता है। अन्य पात्र ऊपर आकाश की ओर देखने लगते हैं। गुपाली मंचाग्र पर खडी रहती है। परदा उठाने वाले दो नटुवे उस से थोडा पीछे रहते हैं।)

पहला मसख़रा: यह क्या हुआ, गुपाली ? प्रेमी तो आकाश में अदृश्य हो गया।

दूसरा मसख़रा: उडन-छू हुआ ऊपर आकाश में। न अपना कोई पता दिया न ठिकाना। काया न छाया। चला गया अपने बेपरवाह!

गुपाली : अब मैं उसे कहाँ ढूँढूँ ? कहाँ खोजने जाऊँ हाय, किस ने उसे मार डाला ?

पहला मसख़रा: हमें हमारा गुसाईं ला दे। बता तो कहाँ गया ?

दूसरा मसख़रा: वरना उस की कोई पहचान, कोई निशानी ही दे जा।

तीसरा मसख़रा: कोई हम से पूछे तो हम क्या बताएँ ? क्या दिखाएँ ?

गुपाली : हाय तुझे किस ने मार डाला, गुसाईं ? किस ने मार डाला हाय ?

तीनों मसख़रे: (एक साथ) तू ने ही उसे मार डाला, हाय! तू ने ही उसे मार डाला, हाय!

गुपाली : तेरी कहाँ मिलेगी कोई निशानी ? तुझे किस ने मार डाला, हाय!

(अचानक भाडिन ज़ोर से चीख़ मार कर, दहाडें मार-मार कर रोती हुई प्रवेश करती है। भाँड नटुवा, जो साधुओं के वेश में है, बाँहों पर नुंदा की लाश लिए आता है। सभी स्तब्द रह जाते हैं। नटुवा लाश को मंच के बीचों बीच रख देता है। भाँडिन छाती पीटती और रोती-कलपती है।)

भाँडिन : मेरे पूत! मेरे लाल मेरी आँखों के प्रकाश! मेरे कलेजे के टुकडे करके तू कहाँ चला गया रे ? मेरे लाल! मेरी आँखों के प्रकाश!

(भाँडिन जैसे अपने बाल नोचती है, कपडे फाड डालती है। उस के इर्द गिर्द खडे अन्य पात्र भौंचक्के और भयभीत हैं। उस का क्रंदन सुन कर मागुन का ह्रदय शोक से भर आता है और वह पछाड खा कर लाश के पास जा गिरता है। सदमे में आकर वह दोनों हाथों से अपना सिर पक्डता है। वह अब भी साधु के वेश में है।)

भाँडिन : ओ मेरे नुंदा! ओ मेरे पूत! मेरे लायक बेटे! ओ भाँड कुल के तारे! मेरे दुलारे!

(सात लडकियों कि भूमिका करने वाले नटुवे, घुटनों पर झुक कर विलाप के स्वर में गाते हैं। गुपाली और अन्य पात्रों का अभिनय करने वाले भाँड उस का साथ देते हैं।)

कोरस : तुझे उन्होंने क्यों मारा ? क्यों मारा ? क्यों मारा रे ?

भाँडिन : रे लाल! मेरे नुंदा! कमाई के ऊँचे पेड मेरे! पूत रे!

कोरस : तुझे क्यों मारा ? क्यों मारा ? क्यों मारा ?

भाँडिन : हाय, तू तो उन्ही के कहे पर चलता था। मेरे गले के मोतियों के हार, मेरी बाँह के बाज़ूबंद! मेरे नुंदा! मेरे पूत!

कोरस : तुझे क्यों मारा ? क्यों मारा ? क्यों मारा ?

भाँडिन : तुझ पर जी जान कुरबान करूं। अपने आप को वारूं। कौन तेरे बिना मंच पर आएगा स्वाँग करने, नाचने गाने! मेरे लाल! मेरे बेटे! कमाई के ऊंचे पेड मेरे! मेरे पूत!

कोरस : तुझे क्यों मारा ? क्यों मारा ? क्यों मारा ?

भाँडिन : (गुस्से और शिकायत भरे स्वर में मागुन से रोते रोते) लो देख लो, जश्न खेलने का अंजान, रसूल मागुन! तुम्हारे बेटे, तुम्हारी कला के रखवाले, तुम्हारी विरासत के वारिस को मार डाला उन लोगों ने। भून डाला गोलियों से!

(मागुन उसे छाती के साथ लगा लेता है, फिर उठ कर खडे होने की कोशिश करता है। अन्य पात्र आँसू बहाते हुये, भयभीत से होके देखते हैं।)

भाँडिन: आओ, और जगाओ मेरे एकनंदुन को! ज़िंदा करो मेरे बेटे को! (मागुन का दामन खींचती है) तीस साल से तुम्हारा बल, तुम्हारा चमत्कार देखती आई हूँ। गुसाईं का भेस बना कर, अलख बम-भोले की रट लगाकर बोटी बोटी कर चुके एकनंदुन को, तुम्ही तो फिर से जिलाते आए हो, मेरे इकलौते बेटे को ज़िन्दा कर दो! ज़िन्दा कर दो मेरे एकनंदुन को, अपने एकनंदुन को, गोलियाँ खा कर गिरे हमारे एकनंदुन को! जिलाओ ज़िन्दा करो मेरे नुंदा को!

(मागुन गुमसुम सा दम संभालता है। फिर कुछ देर दोनों हाथों से अपना मुँह छिपा लेता है, आँसू पोंछता है।)

मागुन: (खेद भरे स्वर में) मेरे किस बल, किस छल, किस झाडू-फूँक से ये फिर जी उठेगा? जो मरा सो गया। वो कहाँ जी उठता है फिर?

भाँडिन: क्या? कहते हो तुम्हारे किस बल, किस छल से जी उठेगा? अरे आकाश मार्ग से जाते हुये तुम्हीं नहीं कहते हो भट्टिनी से, पुत्र की माँ से, कुजमाल से, राजरानी से, सोनमाल से कि एकनंदुन को आवाज़ दो, पुकारो? मैं भी तो पुकार रही हूँ अपने बेटे को, नुंद लाला को। आओ, मेरी आँखों के तारे, मेरे दुलारे, आओ। तो फिर उठो, ताकि ये सब अपने अपने घरों को जाएँ।

(लाश को झकझोरती है, उस की आँखों को खोल कर देखती है, उस के हाथ मलती है।)

मागुन: (धैर्य खो कर) ओ हो, बंद करो यह रोना चिल्लाना, यह विलाप। मैं भला उसे कैसे जिला सकता हूँ?

भाँडिन: क्यों नहीं जिला सकते? कहाँ गया वह तुम्हारा गुसाईं वाला बल?

क्या तुम इसके बिना तडपाओगे, छटपटाओगे नहीं? बुढापे में रंगमंच पर पैर रखते हुए डगमगाओगे नहीं? श्रुक और वाक् गाते समय थर थर काँपोगे नहीं, जैसे जाडों की हवा में पत्ता काँपता है। बोटी बोटी कर लेने, सकोरों में परोसे जाने के बाद भी एकनंदुन को कैसे ज़िन्दा कर लेते थे? मेरे लाल, मेरे नुंदा को ज़िन्दा क्यों नहीं कर सकते?

मागुन: कैसे ज़िन्दा हो सकेगा यह? (साँस भरता है)

भाँडिन: वैसे ही जेसे एकनंदुन हुआ था।

मागुन: एकनंदुन तो प्रतीक है, अलामत है। मायाजाल के परदे को फाड कर जीने का, हंसने-बसने का प्रतीक। मौत पर जीवन की विजय का प्रतीक। एकनंदुन न मरता है, न मारा जाता है। यह तो सब रंगछल है, भ्रम है। परदे की माया, परदे के पीछे चलने वाला प्रपंच। रंग-भ्रम पैदा करने के लिए परदे का इस्तेमाल किया जाता है। ये जो परदा है ना! इसका!

भाँडिन: तब तो मैं ने उम्र-भर धोखा ही खाया है। आज भी खाया। रंगछल से मारा गया मेरा लाडला बेटा। (फिर से विलाप करने लगती है।)

भाँडिन: हाय, तू ने गाँव के लिए गँवाई जान, जश्न के लिए दिए अपने प्राण। ओ मेरी आँखों के प्रकाश! मेरे पूत!

कोरस: अब मैं कहाँ जाऊँ? तुझे कहाँ पाऊँ? कहाँ जाऊँ? तुझे कहाँ पाऊँ?

मागुन: इस ऋषियों की बाड़ी में जो बंदूक उठाए, उस का अंजाम बंदूक से ही होगा।

भाँडिन: किसी रंगछल से ही सही, पर जिला दो मेरे बेटे को, रसूल मागुन! चाहे जैसे हो, मेरे बेटे को जिला दो!

(भाँडिन जैसे आवेश में आ कर मागुन की छाती पर मुक्के मारती है)

भाँडिन: ज़िन्दा कर दो मेरे जिगर के टुकडे को। मेरे एकनंदुन, मेरे लाडले को ज़िन्दा कर दो।

(मागुन रोना चाहता है, मगर रुलाई को रोक लेता है। उत्तेजित-सा हो कर वह मंच पर यहाँ-वहाँ घूमता है।)

मागुन: किस शक्ति से ज़िन्दा कर दूं? तुझे भ्रम है। यह सारा दोष असल में इस परदे का है। (नीचे पडा हुआ परदा उठा लेता है) भट्टों की भाषा में इसे यवनिका कहते हैं। परदे के पीछे से रंगभ्रम पैदा करता है कलाकार। परदों की वजह से हम ने हमेशा धोखा खाया है। जो कुछ कहने या करने लायक नहीं होता, उसे परदे के पीछे छिपा कर दिखाया जाता है। आज हमारी जो हालत है, उस के लिए भी परदे ही ज़िम्मेदार हैं। जब से हम एक बडे देश के शहरी बने, तभी से सच्चाई को परदों के पीछे छिपाया जाता रहा है। कभी इस की इबारत बदली जाती है तो कभी नारे। अक्षरों में फेर-बदल किया जाता है। कभी एक रूप दिखाया जाता है तो कभी दूसरा। इंसानियत, प्यार-मुहब्बत, भाईचारे, मेल-मिलाप, अमन-शांति के बजाय इसे नफरत, हिंसा, अफ़रातफ़री, मज़हबी जुनून और मालकाट के खूनी रंग में रंगा जा रहा है। सारी सच्चाई इस परदे के पीछे छिपी है। इस परदे को फाड डालना होगा। सच्चाई को प्रकट करना होगा। सच्चाई को किसी आड की ज़रूरत नहीं। कोई भ्रम नहीं रहना चाहिए। अब किस बात का डर है? मैं फाड डालता हूं इस परदे को। (आवेश में आ कर परदे को फाड डालता है और उसे लाश के ऊपर डाल देता है।) अब सारे भ्रम दूर हो जाएँगे, सभी के सभी। और तू भी समझ जायेगी कि मैं भी तेरी तरह एक बेबस इनसान हूँ। बेबस इनसान!

(थक कर घुटनों के बल सिर झुकाए बैठ जाता है)

मम्मा मसख़रा: इस तरह के वैराग्य में बेचारे का क्या दोष है? जिसे भी बेटे की मौत का दुख सहना पडे, वही अपना दामन चाक करता है।

(झटके से दरवाज़ा खुल जाता है और एक बंदूकधारी नक़ाबपोश अंदर आकर कडकती आवाज़ में चीखता है)

नक़ाबपोश: खबरदार! कोई हिले-डुले नहीं। सब अपनी अपनी जगह पर रहें। कोई भी हरकत न करें।

(वाद्यकारों को नक़ाबपोश अलग एक तरफ को ले जाते हैं।)

भाँडिन: आ गये, नुंदा के कातिल आ गए। इन्होंने ही उसे मारा है। यहीं हैं मेरे बेटे को मारने वाले!

प्रमुख नक़ाबपोश: खामोश! इस के हथियार कहाँ छिपा कर रखे हैं?

भाँडिन: कौन से हथियार?

प्रमुख नक़ाबपोश: बताते क्यों नहीं? कहाँ हैं इस के हथियार?

भाँडिन: हथियार तो यह अपने साथ ले गया था।

दूसरा नक़ाबपोश: इस के साथ कौन कौन था?

भाँडिन: ये अकेला था।

(भाँडिन मागुन के आगे बाँहें फैला कर मानो उस की रक्षा को खडी हो जाती है। नकाबपोश सब के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते हैं।)

तीसरा नक़ाबपोश: ये किस जगह गिरा था?

(वह भाँड जो लाश को उठाकर लाया था, उत्तर देता है।)

एक भाँड: बाडी के अंदर जो नाला है, उस में। वहीं जहाँ पर पत्थर पडे हैं। मैं दिखाता हूँ।

(प्रमुख नक़ाबपोश एक साथी को इशारा करता है और उसे एक टार्च पकड़ाता है।)

प्रमुख नकाबपोश: तुम इस के साथ जाओ। (नकाबपोश भाँड के साथ बाहर जाता है।)

भाँडिन: (चिल्ला कर) ले गए! अमा नटुवे को ले गए। अब उसे मार डालेंगे!

दूसरा नक़ाबपोश: नहीं, मारेंगे नहीं। ये हमें दिखाए कि सामान कहाँ है। हम सामान लेने आए हैं।

भाँडिन: (काफी साहस जुटा कर) मेरे नुंदा को क्यों मारा तुम लोगों ने? तुम्हारे हाथ झड जाएँ।

प्रमुख नक़ाबपोश: इस ने हुक्म-अदूली की थी।

मागुन: इस ने अपनी विरासत की रखवाली की थी। बिना किसी गुनाह के नौजवानों को मारते हो। खुदा तुम्हें कभी माफ नहीं करेगा कभी नहीं।

दूसरा नक़ाबपोश: तुम लोग मुखबिरी करते हो। शहनाई बजा बजा कर और गा गा कर सिक्यूरिटी वाले कुत्तों को आने के लिए इशारा करते हो। तुम्हारा भी यही अंजाम होगा।

मागुन: तुम अपनी करतूतों के अंजाम की फिक्र करो। हम क्यों छोडें अपना

पुश्तैनी काम ? चार साल हो गए हैं अब हमें कोई स्वांग, कोई नाटक किये हुये, किसी मेले ठेले या त्योहार में गये। आज अगर दर-दरवाज़े बंद कर के यहाँ पर जमा हुए तो तुम्हें यह भी अच्छा नहीं लगा ?

दूसरा नक़ाबपोश: तुम लोगों के लिए ही हम मरते हैं। तुम लोगों के लिये ही ज़ख्मी होते हैं, जिहाद करते हैं और तू जश्न करने चला है ?

कमाल शेर: तुम लोगों की मत मारी गई है। यह कौन सा जिहाद है ?

प्रमुख नक़ाबपोश: जिहाद नहीं तो क्या है ? आज़ादी क्या तश्तरी में रखी मिलेगी ?

कमाल शेर: (साहस करके) जिहाद का मतलब है ऐलान कर के दुश्मन के सामने आना और जंग करना। न कि पीठ पीछे गोलियाँ बरसाना, सोते हुओं को गोलियों से भून डालना। मज़हब कहता है कि दुश्मन अगर सोया हुआ हो तो उसे जगाओ। फिर जब वह हाथों में हथियार ले ले, तब उस के साथ लडो। पर तुम क्या करते हो ? मुखबिर कह कर लोगों को गोलियों से उडाते हो। क्या यही जिहाद है ?

प्रमुख नक़ाबपोश: चुप रहो बे! हमें मुखबिरी मत सुना। जो हमारी बात नहीं मानेगा, उसे हम गोली से उडा देंगे। हम किसी ग़द्दार को बर्दाश्त नहीं करेंगे।

मागुन: (उत्तेजित होकर) अपनी बाहों की ताकत और अपने दिमाग को गिरवी रख कर, पराए देशों से हथियार ला कर, मुँह पर नक़ाब चढ़ा कर, भाईबंदों, बुद्धिजीवियों, डाक्टरों और कलाकारों को मौत के घाट उतारना, क्या यही जिहाद है ? लोगों में दहशत फैला कर उन के घरों से सामान को लूटना, बैंकों में डाके डालना, सोना-ज़ेवर ऐंठना, मासूम बच्चों को गुमराह करना, रुपयों का लालच दे कर नौजवानों को चोर-चकार बनाना, क्या यही जिहाद है ? पराए देश के निशानेबाज़ों को मेहमान बना कर लाना, कश्मीर की इज़्ज़त और कुँवारी लडकियाँ उन्हें भेंट में देना, क्या यही जिहाद है ? बेग़ैरतो! आम लोगों की सुविधा के लिए बने पुलों को उडाना, शिक्षा के स्थानों को जला कर राख कर डालना, कदम कदम पर मौत का सामान बिछाना, क्या यही जिहाद है ? या दीन और मज़हब को

बदनाम करना, इबादत-गाहों की पवित्रता को भंग करना, यह जिहाद है ? बे-शरमो, बेज़मीरो!

प्रमुख नक़ाबपोश: वाह, मुखबिर की क्या खूब अदा है। ज़बान चल रही है या रॉकेट ?

दूसरा नक़ाबपोश: मुसलमान हो कर भी तू बेईमान हो गया है।

मागुन: तुम क्या जानो, मुसलमान क्या होता है ? ईमान क्या होता है ?

प्रमुख नक़ाबपोश: (बंदूक दिखा कर) इस से डरता है या नहीं ? ये बडों बडों को ईमान की राह पर लाया है।

मागुन: जब ईमान का इम्तिहान हो तो कुर्बान होने से क्या डरना ? (इसी समय बिजली चली जाती है)

प्रमुख नक़ाबपोश: अफ़सोस, बिजली चली गई। टार्च जलाओ।

(सभी नक़ाबपोश अपनी अपनी टार्चें जलाते हैं और मागुन और भाँडिन के इर्द गिर्द चक्कर लगाते हैं। भाँडिन मागुन के आगे खडी हो कर अपनी बाहें फैलाती है, यह जतलाने के लिए कि उसे बचाने के लिए वह अपनी जान तक देने को तैयार है। आतंकवादी अपने बूटों की धमक से दहशत उतपन्न करते हैं। इसी समय बाहर गया हुआ नक़ाबपोश और अमा नटुआ प्रवेश करते हैं। नक़ाबपोश के दोनों कंधों पर दो बंदूकें हैं। एक हाथ में वह टार्च और दूसरे में एक और बंदूक लिए हुए है।)

नक़ाबपोश: (अंदर आते हुए) हथियार वसूल कर लिये ए.सी.साहब! ये रहे। (अन्य नक़ाबपोशों में जा कर मिल जाता है।) हमारे नारों का जवाब दो।

प्रमुख नक़ाबपोश: हम क्या चाहते ?

अन्य नक़ाबपोश: आाज़ादी!

दूसरा नक़ाबपोश: आज़ादी का मतलब क्या ?

अन्य नक़ाबपोश: निज़ामे मुस्तफा!

प्रमुख नक़ाबपोश: पाकिस्तान से रिश्ता क्या ?

(सभी नक़ाबपोश एक वृत में घूमते हैं। प्रमुख नक़ाबपोश टार्च से ऊपर की ओर रोशनी डालता है। दूसरा नक़ाबपो मागुन पर गोली चलाता है।)

अन्य नक़ाबपोश: ला इलाहे-इल्लिलाह!

(यह कहते हुए वे एकाएक बाहर चले जाते हैं। अँधेरे में एक चीख सुनाई देती है।)

भाँडिन: अरे, यह किसे मार डाला, यह किसे मार डाला ?

एक आवाज़: अँधेर मचा दी।

मागुन: या ... आ ... आ ... खुदा ... आ ... आ ... आ ... रसूल!
(दोहरा होकर बेटे की लाश के ऊपर गिरता है।)

भाँडिन: तो क्या ... क्या ... तु .. तु .. तुम्हें भी मार डाला ?

दूसरी आवाज़: लस्सू! लस्सू काका

भाँडिन: मार डाला तुम्हें सच कहने पर ? बे-हथियार, बे-औलाद मार डाला। तुम ही थे क्या इन के जिहाद का मँज़िल ?

कमाल शेर: (भर्राए गले से) टिड्डियाँ गई पर धान का सत्यानाश करके। ज़रा कोई रोशनी तो जलाए। लकडी की मशाल या कुछ!
(एक भाँड दियासिलाई जलाता है।)

कमाल शेर: ओह! मेरे बचपन के साथी को मार डाला! मेरे खेल के साथी को मार डाला!
(तभी बिजली आ जाती है। सभी हाथ मलते हुए मागुन के शव के पास जमा हो जाते हैं।)

आवाज़: ओह, मागुन को भी मार डाला।

दूसरी आवाज़: हाय खुदाया! अरे बेरहमो!

एक भाँड: अरे तुम्हारा सत्यानाश हो जाये! खुदा का ख़ौफ भी नहीं तुम्हें।

भाँडिन: अभी मैं ज़िंदा हूं। मेरे सामने मेरे सरताज और मेरे बेटे की लाशें पडी हैं। हथियार गढ़ने और हथियार से खेलने का अंजाम।

कमाल शेर: (आँसू पोंछता है और मागुन के जामे में अपना मुँह छिपा लेता है।)
हाय, मेरे खेल के साथी, हम सब के मागुन, हमारे बुज़ुर्ग अगुआ, हमारी विरासत के रखवाले को मार डाला। हाय हाय!

भाँडिन: खामोश! चुप हो जाओ सभी। जी को कडा करो। दर्द को दिलों के अंदर सहेजो। मेरी ओर देखो। सभी मेरी ओर देखो।
(सभी आर्त हो कर उस की ओर देखने लगते हैं। कमाल शेर अपना मुँह नोचता हुआ सारे रंगमंच पर फिरता है।)

भाँडिन: मेरे सीने में एक और बेटे के मरने का दुख है और दूसरी ओर

घरवाले से बिछुडने का दर्द। यह दुख एक नये प्रकाश, एक नये नूर को जन्म देगा और हमें दहशतगर्दी और अफ़रातफ़री से छुटकारा दिलाएगा।

एक भाँड: हमारे मागुन को मार डाले। एक आधार स्तंभ ढह गया।

कोरस: अब हम उसे कहाँ ढूँढ़ें ? कहाँ पाएँ ? कहाँ पाएँ ?

(मम्मा मसख़रा अपने आप को लिथेडता हुआ आता है और रोते कंठ से ऊँचे स्वर में गाता है।)

मम्मा मसख़रा: जब आधार नहीं रहते हैं
ऊँचे राजमहल ढहते हैं
नष्ट-भ्रष्ट हो जाने पर सब
प्राण कहाँ टिक पाएँगे तब
साया उठे पिता का तो फिर
माँ की शरण सभी गहते हैं

(सभी भाँड आ कर भाँडिन को घेरते हैं। एक वृत बनाते हुए वे घुटनों के बल आर्त हो कर बैठते हैं और उस के स्वर में स्वर मिलाते हैं।)

सभी: साया उठे पिता का तो फिर
माँ की शरण सभी गहते हैं
हाय, माँ की शरण सभी गहते हैं।

(इस से कमाल शेर की कुछ हिम्मत बँधती है)

कमाल शेर: हिन्दू कहा करते थे कि कश्मीर में जब जलदेव ने आतंक मचाया था तब देवी माँ ने ही पत्थर गिरा कर उसे कुचल डाला था।

सभी: साया उठे पिता का तो फिर
माँ की शरण सभी गहते हैं
सभी गहते हैं, सभी गहते हैं ...

(भाँडिन उठ कर खड़ी होती है और अपने दोनों हाथ ऊपर उठा कर आकाश की ओर देखती है, फिर बैठ जाती है)

भाँडिन: इस रंग-मंडल को मिल्टनों ने त्रास का मंडवा बना दिया। पहले आने वाले मागुन को मारा और उस के बाद आज के मागुन को। पर निराश मत होओ। उठो, अभी मैं जो हूँ, तुम सब की माँ। तुम्हारे

जीते और जागने की आशा मन में लिए जीवित माँ। उठो कि कल को एकनंदुन न मारा जाए। उठो, डरो मत। उन सब से कह दो कि रास्ता छोडें जिन की मंज़िल हिंसा है, जंग है, मौत है। जो चाहते हैं कि घर घर में अंधेरा हो, मातम हो, क्रंदन हो, विलाप हो। चलो, मेरे साथ चलो। चलो अपनी जडों की ओर, अपने मूल्यों की ओर। अपनी परंपरा की रक्षा करते हुए चलो। चलो, मुझ माँ के साथ नई रोशनी की ओर चलो। मेल-मिलाप की ओर, जीवन की ओर! माँ कश्मीर का माथा उज्जवल हो! उठो, अपने बाग को इस आग से बाहर निकालो, उठो।

कमाल शेर: (दो लाशों के बीच घुटनों के बल बैठे हुए) बाप-बेटे का मातम करें या तुम्हारे साथ चलें।

भाँडिन: कारवाँ के साथ चलते हुए कोई कोई बिछुड भी जाता है, मगर कारवाँ नहीं रुकता। जाने वाले से बिछुडने का दुख सब के दिलों पर अपना निशान छोड जाता है, लेकिन जिन्हें मंज़िल को पाना हो तो आगे कदम बढ़ाते हैं, रुक नहीं जाते। उठो, चलो मेरे साथ। मैं तुम्हारी मार्गदर्शक हूँ, तुम्हारी माँ! लो!

(धीरे धीरे सब खड़े हो जाते हैं, धीरे धीरे अपने हाथ ऊपर उठाते हैं और दर्शकों की ओर पीठ करके सामने फैल रहे प्रकाश की ओर चल पडते हैं।)

★ ★ ★ ★ ★

भाँड-दुहाई

(जब आधार नहीं रहते हैं)

Bhaand-Duhaayee

(A Contemporary Kashmiri Play based on Kashmiri Drama 'bhàndû-päthûr')

मोती लाल क्यमू

==========

'Bhaand-Duhaayee', A Contemporary Kashmiri Play based on *bhànd-päthûr* by Moti Lal Kemmu.
Hindi translation by Shashi Shekhar Toshkhani
Source: Moti Lal Kemmu's 'Bhand-Duhaayee', published in 2002.
Internet Version by M.K.Raina.
Work completed on 30.11.2006 ~ Update 05.05.2020

Moti Lal Kemmu's
भाँड-दुहाई
Bhaand-Duhayee
A Contemporary Kashmiri play based n Bhand Pather
Hindi Translation by Shashi Shekhar Toshkhani